महाविद्यालयीन पत्रिका 2022.23

नवल प्रभात

शासकीय नवीन महाविद्यालय हसौद

जिला : सक्ती (छ.ग.)

Website : www.govtcollegehasoud.com, E-mail : principal@govtcopllegehasoud.com

महाविद्यालय की गतिविधियां

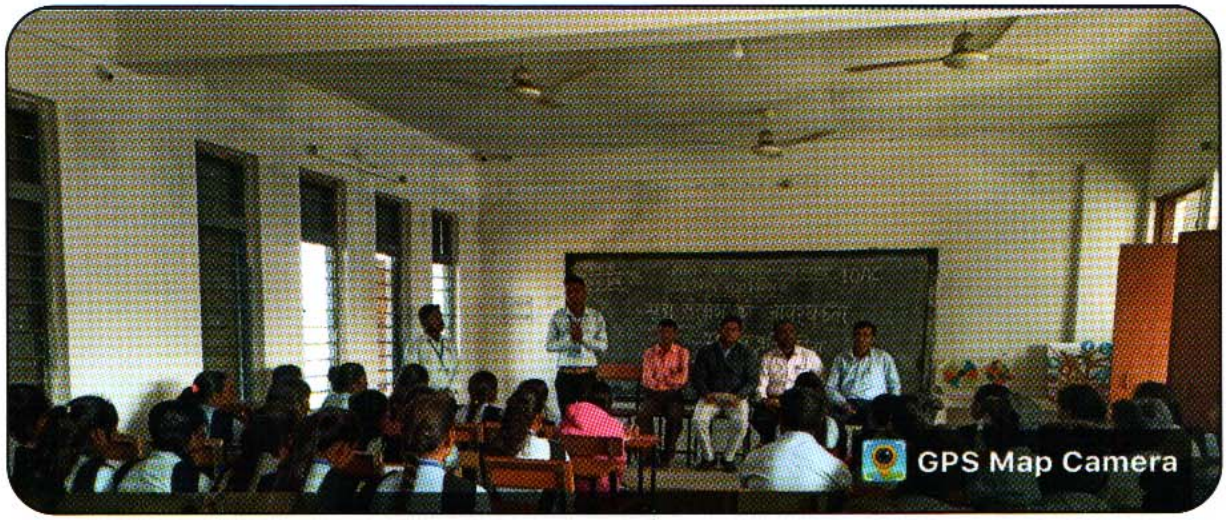

शासकीय नवीन महाविद्यालय, हसौद

जिला : सक्ती (छ.ग.)

नवल प्रभात

महाविद्यालय पत्रिका 2022-2023

संरक्षक :

प्रो. आर.पी. उपाध्याय

(प्र. प्राचार्य)

संपादक :

प्रो. मनीष दास मानिकपुरी

संपादक मण्डल :

डॉ. सरित पाण्डेय

प्रो. जीनत पैकरा

श्री मनीष दास मानिकपुरी

प्रकाशक

महाविद्यालयीन पत्रिका प्रकाशन समिति

शासकीय नवीन महाविद्यालय हसौद, जिला : सक्ती (छ.ग.)

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुतकर्त्ता	पृ.क्र.
छत्तीसगढ़ की राममय भूमि	डॉ. सरिता पाण्डेय, सहायक प्राध्यापक	03
अच्छी माँ, महत्व	बी.आर. शर्मा मुख्य लिपिक	04
The Golden Egg	Dilip Kumar Khurana	05
The Ants and The...		06
वाह रे गरीबी	रवि कुमार निराला, रसायन शास्त्र विभाग	07
हिन्दी भाषा हमारा स्वाभिमान	प्रो. कृष्ण कुमार साहू, अतिथि व्याख्याता हिन्दी	07
प्रेरक प्रसंग	पूनम साहू, एम.ए. 4 हिन्दी	08
मंय छत्तीसगढ़िया अंव	पंकज चन्द्रा, बीएससी-3 बायो	09
परीक्षा	टीना यादव, बी.एस.सी.-3	09
जीवन की सीख	टीना यादव, बी.एस.सी.-3	09
छत्तीसगढ़ी गीत संगीत	पंकज चन्द्रा, तृतीय वर्ष, बायो.	10
थोड़ा सा सुकुन दे खुदा मुझे	रागिनी जायसवाल, बी.सी.ए.-3	11
गुरु है मेरे	रागिनी जायसवाल, बी.सी.ए.-3	11
बाल मजदूर पूजा साहू	बी.एस.सी. मैथ्स, तृतीय वर्ष	12
नाना की लाठी	पूजा साहू	12
भूख और गरीबी	प्रिया निराला, एम.ए. इंग्लिश, प्रथम सेमेस्टर	13
छत्तीसगढ़ दर्शन	कविता बंजारे, बी.एस.सी., द्वितीय वर्ष	13
सफलता की पहली सीढ़ी	कविता बंजारे, बी.एस.सी.-2	13
समाज और बेटी	सुक्रांति जाटवर, एम.ए.हिन्दी-4	14
माँ और पापा सिम्मी आजाद	बी.एस.सी. बायो, द्वितीय वर्ष	
कविता	दीपा साहू, एम.ए. द्वतीय हिन्दी	14
जिन्दगी	पूर्णिमा भारती, एम.ए.2 हिन्दी	14
About Father	सी.आर. गिरी, बी.एस.सी.-3	15
उजाला उसी ने पाया है	चित्ररेखा साहू, बी.एस.सी. मैथ्स, प्रथम वर्ष	16
मेरा छत्तीसगढ़	विमला साहू, एम.एस.सी, द्वितीय सेमेस्टर, फिजिक्स	16
फूलों की कविता	ममता जायसवाल, एम.ए., द्वितीय सेमेस्टर	16
बेटियां	सुक्रांती जाटवर, एम.ए.हिन्दी	17
सर पे कफन बांध चली बेटियां	राजेश्वरी टण्डन, एम.ए.हिन्दी द्वितीय सेमेस्टर	17

विषय	प्रस्तुतकर्त्ता	पृ.क्र.
जग हो तो नेट	अर्जुन कुमार माली, एम.ए. हिन्दी, द्वितीय सेमेस्टर	17
छत्तीसगढ़ के गौरव की जय हो	हेमलता साहू, एम.ए.हिन्दी	18
उदास न हो	कु. पूजा लहरे, एम.ए.-2 सेमे.	18
देश भक्ति	ज्योति साहू, एम.ए.-2 सेमे.	18
दो पल की जिंदगी है	प्रीति भास्कर, एम.ए. हिन्दी-4	18
माँ तो माँ होती है	अंजना जाटवर, एम.ए.हिन्दी-4	19
कोशिश कर	गायत्री शांते, बी.काम.-1	19
पिता	छोटी टंडन, बी.काम. प्रथम-1	19
माटी अऊ दाई के ममता	रविकुमार बी.एस.सी.-3	20
कविता	धर्म विजय रात्रे, बी.काम.-2	20
दिया हम भी जलायेंगे	ईशा महंत, बी.काम.-1	21
गिरना भी अच्छा है	ज्योति पटेल, बी.काम.-1	21
ईश्वर ने कुछ भी दिया नहीं	रवि नारंग, बी.काम.-2	21
गुरु को जिंदगी का	रेशमी लहरे बी.काम.-2	22
दुनिया की इस भीड़ में	स्मृति मधुकर, बी.काम.-1	22
नैतिक शिक्षा धर्म	विजय रात्रे, बी.काम.-2	22
बड़ा बनने के लिए बड़ा सोचो	मेघा भारद्वाज, बी.काम.-1	23
गुरु पूर्ण कविता	रजनी बंजारे, बी.काम.-1	24
बचपन	सूरज आदित्य, बी.ए.-1	24
सफर में धूप तो होगी...	दिलेश्वर सिंह सिदार, सहा.प्रा.	24
दिल कहता है झूम उठो	धनेश्वरी चन्द्रा, बी.एस.सी.-3	24
बेटी बिन अधूरा संसार	रविना टण्डन, एम.ए.हिन्दी-2	25
आत्मविश्वास	अंजना जाटवर, एम.ए.हिन्दी-4	25
एक बूढ़ी और की कहानी	कुमारी पटेल, बी.ए.-2	25
छत्तीसगढ़ की लोक परम्परा में धान्य संस्कृति	रविना एम.ए. हिन्दी, 2 सेमे.	26
कविता	सोनिया भारद्वाज बी.काम.-1	26
बचपन कितना सुहाना	कामिनी साहू, बी.काम.-3	26
ईमानदार वीर बालक	निशा खुंटे, बी.काम. प्रथम	27
संगीत का असर		28
आओ एक जुट होकर	निशा खुंटे, बी.काम.-1	29
"भ्रूण हत्या अपराध है"	अनिल यादव, अतिथि व्याख्याता, भौतिक शास्त्र	29
माँ पर कविता	गनेशी पटेल, बी.ए.-2	30
बचपन कितना	कामिनी साहू, बी.काम.-2	30
मेरे प्यारे Bhaiyaa	निशा अजगले, बी.एस.सी.-2	30
कोविड कोरोना वायरस	अनिषा, बी.ए. द्वितीय	31
मोबाईल के फायदे और नुकसान	अनिषा, बी.ए. द्वितीय	32

सुश्री अनुसुईया उइके
राज्यपाल छत्तीसगढ़

सत्यमेव जयते

राज्यभवन
रायपुर - 492001
छत्तीसगढ़, भारत
फोन : 91-771-2331100
फोन : 91-771-2331105
फैक्स : 91-771-2331108

क्र./ पीआरओ/रास/2022
रायपुर, दिनांक अक्टूबर 2022

-:संदेश :-

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शासकीय नवीन महाविद्यालय हसौद, जिला-जांजगीर-चांपा द्वारा शैक्षणिक सत्र वर्ष 2022-23 हेतु वार्षिक पत्रिका ''नवल प्रभात'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय पत्रिकाएं संस्था की शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियों को प्रस्तुत करता है। मैं आशा करती हूं कि यह पत्रिका विद्यार्थियों में साहित्यिक प्रतिभा को निखारने में सहायक सिद्ध होगी। साथ ही अन्य विद्यार्थी भी महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों से परिचित हो सकेंगे।

वार्षिक पत्रिका ''नवल प्रभात'' के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(सुश्री अनुसुईया उइके)

37
04.11.2022

निर्मल सिन्हा
पूर्व विधायक
38, मालखरौदा
जिला- सक्ती (छत्तीसगढ़)
मो.नं.- 9630201900

निवास
मु. पो. हसौद
व्हाया-बिर्रा
जिला- सक्ती (छत्तीसगढ़)
पिन कोड- 495681

शुभकामना संदेश

प्रसन्नता की बात है कि शासकीय नवीन महाविद्यालय हसौद जिला सक्ती द्वारा महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका नवल प्रभात के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

उच्च शिक्षा के विकास के लिए प्रतिबद्ध प्रयासो को प्राथमिकता देना जरुरी है। शैक्षणिक संस्थाओं की सकारात्मक सक्रियता शिक्षा के उच्च गुणवत्ता को बनाये रखने में प्रभावी भूमिका निभाती है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका शैक्षणिक सांस्कृतिक और सृजनात्मक गतिविधियों एवं शोधपरक आलेखों से परिपूर्ण होगी तथा शिक्षकों अध्येताओं और विद्यार्थियों के लिए बेहद उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपका

(निर्मल सिन्हा)

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि शासकीय नवीन महाविद्यालय हसौद जिला-सक्ती द्वारा विद्यार्थियों की रुचि, प्रतिभा को पुष्ट करने के उद्देश्य से महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका ''नवल प्रभात'' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका शैक्षणिक सांस्कृतिक एवं सृजनात्मक गतिविधियों से पूर्ण होगी। जो महाविद्यालय के लिए बेहद उपयोगी सिद्ध होगी।

''नवल प्रभात'' पत्रिका के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं...

राधे चन्द्रा
अध्यक्ष - जनभागीदारी समिति

प्राचार्य की कलम से

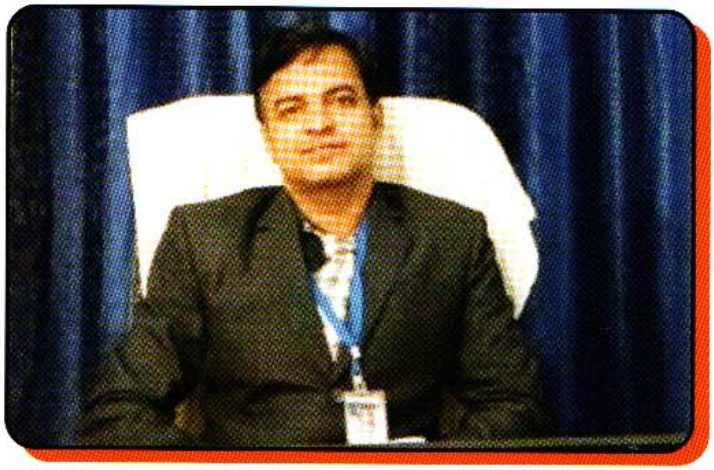

प्रसन्नता का विषय है कि हमारे महाविद्यालय से नवल प्रभात पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसके माध्यम से छात्र-छात्राओं सहित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के महत्वपूर्ण विचारों को जानने का अवसर मिलेगा। इनके समस्त विचारों को ध्यान में रखते हुये एक नयी योजना क्रियान्वित हो सकेगी जो सभी के लिये सर्वोत्तम होगी।

मेरे विचार से किसी भी संस्था के विकास कि लिये संसाधनों की उपलब्धता के साथ साथ कौशल जिजीविषा एवं योग्यता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ है व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास, जिसमें पत्रिका प्रकाशन भी एक ईमानदारी के साथ सकारात्मक सोच रखते हुये सुदृढ़ प्रयास करें तो सफलता अवश्य मिलती है।

मेरी यही कामना है कि विद्यार्थी आने वाले समय का हर क्षण भविष्य को उज्जवल बनाने में प्रवेश करेंगे। निश्चय ही उनके सपने साकार होंगे।

सफल जीवन की कामनाओं सहित...

(आर.पी. उपाध्याय)
प्र. प्राचार्य

छत्तीसगढ़ की राममय भूमि

डॉ. सरिता पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
हिन्दी विभागाध्यक्ष

छत्तीसगढ़ पूर्वी हिन्दी का ही एक रुप है। यह अवधी की जुड़वा बहन है। हम देखते हैं कि अवध और छत्तीसगढ़ की सभ्यताओं में काफी समानतायें है। किन्तु रीति रिवाज संस्कारों के वर्णन में दोनों में कुछ सूक्ष्म असमानतायें भी है। हिन्दी के राम कथा में अद्वेत वाद का जैसा निरुपण मिलता है, वैसा छत्तीसगढ़ी राम कथा में नहीं है। छत्तीसगढ़ी काव्य में श्रम एवं कृषि सभ्यता की झलक दिखाई देती है। छत्तीसगढ़ी के लोक छंद व लोक गीतों में माधुर्य के दर्शन होते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि छत्तीसगढ़ के साहित्य में भी राम रचे बसे हैं। महा कवि श्री कपिल नाथ कश्यप जी ने छत्तीसगढ़ी भाषा में महाकाव्य 'श्री रामकथा' का रचना कर छत्तीसगढी साहित्य को समृद्ध करने में अपनी काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। उनके राम कथा में छत्तीसगढ़ की संस्कृति व लोक जीवन भी स्पंदित है। कहा जा सकता है कि महा कवि कश्यप जी ने अपने इस महा काव्य में आंचलिक आधार पर कथा, घटना भाव, विचार और अभिव्यक्ति के उपक्रम में नवीनता का भी समाहार किया है। इसी भांति छत्तीसगढ़ी खंड काव्यों की सुदीर्घ परंपरा देखने को मिलती है। जिसमें राम विषयक खण्ड काव्यों में कुवर दलपत सिंह कृत ''रामयशमनोरंजन', पंडित श्यामलाल चतुर्वेदी कृत ''राम बनवास'', डॉ. विनय कुमार पाठक कृत ''सीता के दुःख'', स्व. कपिलनाथ कश्यप कृत ''सीता के अग्नि परीक्षा'', स्व. बृजलाल शुक्ला कृत ''सबरी सत्कार'', पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी कृत ''राम केवट संवाद'' उल्लेखनीय है। इन रचनाओं के कथानक पुरातन होते हुये भी उनमें नवीन और मौलिक कल्पना की गई है।

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में भी राम है। हमारे संस्कारों में राम के बिना कोई भी काम नहीं होता। बच्चा जब जन्म लेता है तब भी राम सोहार गाया जाता है और बालक को राम के रुप में देखा जाता है एवं मृत्यु के समय में भी ''राम नाम सत्य है'' का उद्‌गार किया जाता है। इस प्रकार श्री राम का नाम, महात्म्य और लीला रुप छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में स्थान-स्थान पर व्याप्त है।

छत्तीसगढ़ी को राम के ननीहाल के रुप में भी जाना जाता है। विद्वानों की राय में राम का ननीहाल छत्तीसगढ़ के स्थित कोसला नामक गांव है। इसी के समीप ग्राम खरौदा में लक्ष्मणेश्वर मंदिर है। रतनपुर के पहाड़ों पर स्थित राम लक्ष्मण का मंदिर यहां की पुरातात्विक संपदा के रुप में जानी जाती है। समूचे छत्तीसगढ़ के जन-जीवन में राम और कृष्ण ऐसे जुड़ गये हैं कि उनके बिना यहां की संस्कृति का कोई महत्व नहीं रह जाता। हम देखते हैं कि यहां के तीज त्यौहार खासकर कृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमीं, दशहरा आदि का उत्सव बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। यहां के देहातों में भी कहीं भी चले जाइये, ग्रामीणों में रामचरित मानस का पाठ होता हुआ मिलेगा। गांव-गांव में नवधा रामायण की धूम मची रहती है। जिसमें पचासों रामायण मंडलियां अपनी कला का प्रदर्शन करती है। यहा मानस प्रवचन, मानस यज्ञ का आयोजन जगह जगह होता हुआ दिखाई देता है। जिसमें देश के राम कथा के वाचक, मर्मज्ञ व विद्वान आमंत्रित किये जाते हैं। छत्तीसगढ़ में ऐसे रामायणी है ज़ो देश के कोने कोने में राम कथा का गायन करने जाते हैं। शिवरीनारायण व नरियरा के रामलीला समूचे देश में प्रसिद्ध है। नरियरा की लीला मंडली देश के कई भागों की यात्रा कर चुकी है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि छत्तीसगढ़ में राम कथा का प्रचुर प्रचलन है। छत्तीसगढ़ की माटी में राम रचे बसे हैं। रामायण युगीन दंडक वन आज का दण्डकारण्य है। 14 वर्ष के वनवास काल का अधिकांश भाग राम ने यहीं बिताये हैं। हम देखते हैं कि आज भी गोंड़ लोग अपने को रावण वंशी ही बताते हैं। राजा राम की माता कौशिल्या इसी दक्षिण कौशल से अपने ससुराल अयोध्या गई थी। जन स्मृति के अनुसार रायपुर जिले के तुरतुरिया ग्राम में वाल्मिकी जी का आश्रम है। वहीं राम भक्त शबरी का आश्रम शिवरीनारायण को माना जाता है। व खरदूषण का संबंध खरौद से जुड़ा हुआ है। रतनपुर का रामटेकरी भी राम के साथ जोड़ा जाता है। वहीं सीता बेंगरा की गुफा छत्तीसगढ़ में ही है। बस्तर के चित्रकूट में पंचवटी होने का दावा किया जाता है।

राम यहां वाल्मिकी से तुलसी के मानस तक के प्रभाव से छन कर आया है और इसी मिट्‌टी की गंध व अंचल के रंग में रंजित होकर निकला भी हैं। लोक कीर्तन व लोक भजन की परंपरा में भी राम रमें हुए है। राम अवतारी भी है, और मर्यादा पुरुषोत्तम भी है, लेकिन आम आदमी की विशिष्टांओं से युक्त छत्तीसगढ़ जन भी है। जिनके आचरण, परिधान, लोकविश्वास, रीति, निति, खान-पान सभी छत्तीसगढ़ी संस्कृति और लोक मानस में रंजीत राम राजा कम प्रजा अधिक है। वे सीधे साधे कृषक व श्रमिक भी हैं, आदिवासियों के साथी तथा अनपढ़ लोगों के सहयोगी भी हैं। वे ऐसा प्रत्येक कर्म निःसंकोच करते हैं जिनमें श्रम सेवा व सात्विकता हो, उनमें वह सब है, जिससे लोक जीवन सुधरता संवरता है। लोक की शक्ति और अस्मिता के प्रतीक के रुप में राम लोक जीवन में अधिष्ठित है। छत्तीसगढ़ लोक मानस के आराध्य श्री राम है एवं छत्तीसगढ़ लोक जीवन के आधार भी । राम जीवन के प्रत्येक क्षण में छत्तीसगढ़ जन के सखा, गुरु के रुप में उसे बेहतन मानव बनाये रखने के दिशा में निर्देशित कर जीवन को सफल बनाते हैं।

बी.आर. शर्मा
मुख्य लिपिक

• अच्छी माँ •

यह सोच आज आँखों में दो आसू आएँ।
कोई बताएँ ऐसी अच्छी माँ हम कहां से लाएँ।
काँटों को जिसने हमें हरदम दूर हटायों।
हाथ पकड़ जिसने हमें चलना सिखायों।।
जाग-जाग कर जिसने हमें रातों में पढ़ना सिखाया।
दुनियाँ के सामने एक अच्छा इंसान बनाया।।
हमारी खुशी के लिये चुने जिसने दुख के साये।
कोई बताएँ ऐसी अच्छी माँ हम कहाँ से लाएँ।।
देख खुशी हमारी जो सबसे ज्यादा खुश होती है।
दुख में हमारे सबसे पहले सबसे ज्यादा रोती है।।
जिस पर माँ की ममता का निर्मल साया।
उससे धनवान हमने कहीं जग मे न पायों।।
जिसके लिए हरि भी झोली ले द्वार पर आए।
कोई बताएँ ऐसी अच्छी माँ हम कहाँ से लाएँ।।
जब कभी भगवान का ध्यान हमने लागायों।
स्वर्ग सुख माँ हमने तेरे चरणों में पायों।।
माँ की दया की नहीं कर सकते कोई गिनती।
इसी लिये प्रभु आपके चरणों में करता हूँ मैं विनती।।
माँ की ममता के आँचल से न करना हमें पराये।
कोई बताएँ ऐसी अच्छी माँ हम कहाँ से लाएँ।।

• महत्व •

मंदिरों में भक्त का, शरीर में रक्त का
जिन्दगी में वक्त का, बड़ा ही महत्व है
स्कूल में शिक्षक का, सेमनरी में रेसलर का
फिल्म में एक्टर का, बड़ा ही महत्व है
सफर में कार का, बिजली में तार का
लड़ाई में तलवार का, बड़ा ही महत्व है
पढ़ाई में तेज का, होटल में भोज का, बड़ा ही महत्व है
नौकरी में एज का, बड़ा ही महत्व है
पहाड़ों में भालु का, फलों में सतालु का
ऑफिस में बाबू का, बड़ा ही महत्व है
महिलाओं में बहन का, अफसरों में कलेक्टर का
नेताओं में प्राईम मिनिस्टर का, बड़ा ही महत्व है
मनुष्य में नरम का, समाज में चरम का
नारी में शर्म का, बड़ा ही महत्व है
गणित में सूत्र का, परिवार में पुत्र का
समाज में गोत्र का, बड़ा ही महत्व है
रेलवे में बुकिंग का, किचन में कुकिंग का
ट्रेन में टिकट चेकिंग का, बड़ा ही महत्व है
पति-पत्नि में मेल का, सब्जी में तेल का
सजा में जेल का, बड़ा ही महत्व है
बागों में माली का, ससुराल में साली का
गंदगी में नाली का, बर्तन में प्याली का, बड़ा ही महत्व है
बैठक में संवाद का, पति-पत्नी में विवाद का
चाय का स्वाद का, बड़ा ही महत्व है

The Golden Egg

One upon a time, a farmer had a goose that laid one golden egg very day. the egg provided enough money for the farmer and his wife to support their daily needs. The farmer and his wife continued to be happy for a long time.

But one day the farmer though t to himself, "Why should we take Just one egg a day. Why can't we take them all at once and make a lot of money." The farmer told his wife his idea and she foolish agreed.

The next day as the goose laid its golden egg the farmer was quick with a sharp knife. He killed the goose and cut its stomach open in the hopes of finding all its golden eggs. But as he opened the stomach the only thing he found was guts and blood.

The farmer quickly realized his foolish mistake and proceeded to cry over his lots resource. As the day went on the farmer and his wife become poorer and poorer. How joined and how foolish they were.

The Moral

Never act before you think

Dilip Kumar Khurana
Guest Lecturer English

The Ants and The Grasshopper

One bright autumn day, a family of ants was busy working in the warm they had stored up during out the grain they had starving grasshopper came up with his fiddle under his arm the grasshoppers humbly begged for a bite to cat.

What cried the ants Havant you stored any food away for the winter, what in the world were you doing all summer.

"I didn't have time to store any food before winter" the grasshopper whined. "I was too busy making music that the summer flew by."

The ants simply shrugged their shoulders and said "Making music were you very well now dance". The ants then turned their backs on the grasshopper and returned to work.

The Moral

There's time for work and a time for play.

Dilip Kumar Khurana
Guest Lecturer English

• हिन्दी भाषा हमारा स्वाभिमान •

प्रो. कृष्ण कुमार साहू
अतिथि व्याख्याता हिन्दी

हिन्दी हिन्द हिमालय पर शोभित,
मीठी बोली अद्‌भूत वाणी संग।
हिन्दी हमारी बड़ी प्यारी न्यारी,
मातृभाषा हिन्दी बावन अक्षर संग।
संस्कृत भाषा से बनी हिन्दी भाषा,
हिन्दी भाषा बनी विश्व पहचान।
दोहा, सोरठा, अलंकार, चौपाई व छंद,
करती है दस रसों से रसपान।।
संस्कृत से हमको मिली संस्कृति,
हिन्दी भाषा से मिला हिन्दुस्तान।
जग-जग ज्योति जली हिन्दी की,
विश्व पटल पर लिख रही हिन्दी दास्तान।।
बाल्मिकी रामायण रची संस्कृत में
तुलसी रचना रची अवधी रामायण।
बेदब्यास रचना रची महाभारत,
गीता सार का होत श्री नारायण।।
समृद्ध, सरल भाषा आधुनिक की
भारत देश करते हिन्दी का गुणगान।
हिन्दी वैभव संस्कृति हिन्दुस्तान,
उत्तर से दक्षिण तक हिन्दी अभिमान।
ग्यारह स्वर तैतीस व्यंजन,
हिन्दी भाषा से होती अलग पहचान।।
बावन अक्षरों से ओढ़ी चुनरी
राष्ट्रभाषा हिन्दी हमारा स्वाभिमान।।
जन-गण-मन की अभिलाषा का,
हम करते दिल से अभिनंदन।।
काव्य रचना की अभिलाषा
हिन्दुस्तान हमारा हिन्दी भाषा हमारी धड़कन।
काव्य, पद्‌य, गद्‌य, कहानी, उपन्यास को,
दोहा, अलंकार, चौपाई, छंद से बांधा।
पढ़कर, सुनकर होत मन प्रफुल्लित,
सब भाषाओं से सुन्दर हिन्दी भाषा
हिन्दी भाषा है जगमग ज्योति,
हिन्दी भाषा है हमारा स्वाभिमान।।

• वाह रे गरीबी •

गुमनाम शहर में मैं अपना नाम ढूँढ़ रहा हूँ,
गरीब हूँ साहब कुछ काम ढूँढ़ रहा हूँ।
हूँ पढ़ा लिखा बी.ए., एम.ए., पी.एच.डी. कर रखी मैंने,
मिल जाए कहीं इन प्रमाणों का प्रमाण ढूँढ़ रहा हूँ।
गरीब हूँ साहब कुछ का ढूँढ़ रहा हूँ।
है सर पर मेरे दो भाई, दो बहनों की जिम्मेदारी।
सोचा था पढ़-लिखकर मिलेगी नौकरी सरकारी।
पैरों ने भी कहा है थोड़ा आराम ढूँढ़ रहा हूँ।
गरीब हूँ साहब कुछ काम ढूँढ़ रहा हूँ।
माँ भी बूढ़ी हो चुकी अब पापा का चलना मुश्किल है।
कब मिलेगी उनको राहत, कहाँ पर मेरी मंजिल है।
उनकी आँखों के सपनों को,
सच करने का सामान ढूँढ़ रहा हूँ।
गरीब हूँ साहब कुछ काम ढूँढ़ रहा हूँ।
छत से टपकते पानी भी,
लगते हैं आँसू सपनों के
बाहर निकला, दुनिया देखी,
बातें करते सब अपने-अपनों की।
जिल्लत में कटा हे सारा दिन
सुकुन की शाम ढूँढ़ रहा हूँ
गरीब हूँ साहब कुछ काम ढूँढ़ रहा हूँ।
जब भी आता हूँ घर को वापस,
माँ की आँखे कुछ कहती है।
वो देख मेरा मुखड़ा उतरा सा,
आँखे उसकी तरतर बहती है।
देकर उम्र कमाए हे मैंने,
ये कुछ कागज के टुकड़े।
इन कागज के टुकड़ों का सम्मान ढूँढ़ रहा हूँ।
गरीब हूँ साहब कुछ काम ढूँढ़ रहा हूँ।
गुमनाम शहर में अपना नाम ढूँढ़ रहा हूँ।
गरीब हूँ साहब कुछ काम ढूँढ़ रहा हूँ।

रवि कुमार निराला
रसायन शास्त्र विभाग

कहानी

प्रेरक प्रसंग

रात्रि का समय था, चारो तरफ चिर शांति छाई हुई थी। पास के ही एक कमरे में 4 मोमबत्तियां जल रही थी। आसपास के वातावरण को बिलकुल शांत पाकर आज वे आपस में दिल की बात कर रही थी।

पहली मोमबत्ती कहती है - मैं शांति हूँ, लेकिन मुझे अब ऐसा लगता है कि इस दुनिया को मेरी जरुरत नहीं रही। हर ओर इस प्रकार की आपाधापी और लूट-मार मची हुई है कि मत पूछो। मैं यहाँ अब और नहीं रह सकती। ऐसा कहने के बाद उस पहली मोमबत्तीस बुझा गई।

दूसरी मोमबत्ती कहती है - मैं विश्वास हूँ, और मुझे लगता है कि झूठ और फरेब से भरे इस वातावरण में मेरी भी यहाँ कोई जरुरत नहीं है। मैं भी यहाँ से जा रही हूँ। दूसरी मोमबत्ती भी बूझ गई।

तीसरी मोमबत्ती कहती है - में प्रेम हूँ मेरे पास जलते रहने की शक्ति है, पर आज हर कोई इतना व्यस्त है कि मेरे लिए किसी के पास समय ही नहीं। दूसरों से तो दूर लोग अपनों से भी प्रेम करना भूलते जा रहे हैं। मैं ये सब और नहीं सह सकती। मैं भी अब इस दुनिया से जा रही हूँ। और ऐसा कहते हुए तीसरी मोमबत्ती भी बुझ गई। तीसरी मोमबत्ती अभी बुझी ही थी कि छोटा बालक उस कमरे में प्रवेश करता है।

इस प्रकार मोमबत्तियों को बुझे देख वह घबरा गया। उसकी आँखों से आंसू बहने लगे हौर वह रुंआसा होते हुए बोला "अरे, तुम मोमबत्तियां जल क्यों नहीं रही ? तुम्हें तो अंत तक जलना है ! तुम इस तरह बीच में हमें कैसे छोड़कर जा सकती हो ?

चौथी मोमबत्ती उस बालक से कहती है, "अरे ओ प्यारे बच्चे ! रोओ नहीं, घबराओ नहीं। मैं आशा हूँ और जब तक मैं जल रही हूँ हम बाकी सभी मोमबत्तियाँ को फिर से जला सकती है।" इतना सुन उस बच्चे की आँखे चमक उठी और उसने आशा के बल पर शांति, विश्वास और प्रेम रुपी मोमबत्ती को जलाकर पूरे कमरे को फिर से प्रकाशित कर दिया।

मोमबत्ती की प्रेरणादायक कहानी से हमें यह सिख मिलती है :- जब आपके आपको आसपास सब कुछ बुरा होते हुए दिखे चारो ओर अंधेरा हो, अंधेरा दिखाई दे, अपने भी आपका साथ छोड़ने लगे तो भी आप हिम्मत नहीं हारे। अपनी आशा की मोमबत्ती को जलाए रखिए, बस अगर ये जलती रहेगी तो आप किसी भी और मोमबत्ती को प्रकाशित कर सकते हैं। आज कुछ दिन पहले हमने अपने एक प्रिय कलाकार सुशांत सिंह राजपूत को खो दिया। बहुत ही कम समय में उन्होंने जिस ऊँचाई को छू लिया वह बहुत प्रशंसनीय है। लेकिन आपने अपनी उम्मीद (आशा) क्यों छोड़ दी। आपको तो अभी बहुत ऊपर जाना था। आप तो मध्यम वर्ग के उन सभी युवाओं के लिए प्रेरणा थे।

लेखिका
पूनम साहू
एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर (हिन्दी)

मंय छत्तीसगढ़िया अंव

मंय छत्तीसगढ़िया अंव ग
भारत मां के रतन बेटा बढ़िया अंव रे
सोन उगाथौं माटी खाथौं
मान ल देके हांसी पाथौं
खेती खार संग मोर मितानी
घाम-मयारु हितवा पानी
मोर इहि जिनगीन मंय नगरिया अंव ग
किसन के बड़े भइया हलधरिया अव रे...
देस मया के भारत गीता
दाई ददा मोर राम अउ सीता
दया मया मोर परवा छानी
परके सेवा मोर सिखानी
घाम पानी सहवइया मैं लहरिया अंव ग
मोर चंदैनीन गोंदा में लहरिया अंव रे
ढेरा आंटत उमर पहागे
सुनत गारी कान पिरागे
अतिमा देखत आंखी आगे
भुंसा के भुर्री गुंगवागे
झन कह मोला लेढ़वा डोमी करिया अंव ग
सिधा में सिधा नई तो डोगी करिया अंव रे
मैं छत्तीसगढ़िया अंव रे

पंकज चन्द्रा
बीएससी, तृतीय वर्ष (बायो)

परीक्षा

परीक्षा का रण जैसे युद्धभूमि का क्षण
मन स्वयं का ही शत्रु हो जैसे,
हृदय में हो हार का डर।
सर्वस्व समर्पण फिर भी भरा हो हार का
तू योद्धा है, बस युद्ध कर
मत शंका कर अपने जीत पर
विजय तिलक लगा मस्तक पर
उठा हस्त पर खड़ग
सिर्फ सोच रख जीत की।
हर पल चिंता को चीता बनाकर दाह कर दो
अग्नि में
तुम वीर हो, बने रणभूमि के लिए
ज्वाला आँखों में रखी, हवा सी रफ्तार हो।
तुम रुद्र हो, तुम रौद्र हो
हमसे चलता संसार है।
मत भय रख हृदय में बस हर्ष की उन्माद हो
ये परीक्षा है घड़ी तुम्हारी जो करती
आगे सफलता तुम्हारा अभिषेक हो।

टीना यादव
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

जीवन की सीख

टीना यादव
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

सूरज का प्रकाश हमें आगे बढ़ना सिखाता है
अंधेरे को चिरकर नई सुबह दिखाता है।
चांद की रोशनी, पृथ्वी की निर्मल काया दिखाती है,
चंचल सी मन को स्थिरता का भाव सिखाती है।
पृथ्वी हमें प्रकृति की अनुपम सुंदरता का आभास करती है
हर परिस्थिति हर सीन में खुद को बदलना सिखाती है
जल हमारे भावनाओं को दर्शाता है
हर परिस्थिति में आँखों से आँसू छलककर, खुशी और गम
का फर्क करना सिखाती है।
अग्नि हमारे क्रोध, द्वेष, जलन का प्रतीक है,
जो रिश्ते में हो तो रिश्ते बिखर जाते हैं स्वयं में
हो तो देह जल जाती है।
आकाश मन की हर्ष, उन्माद, प्रसिद्धि को दर्शाता है
स्वयं जीवन में सफल होकर ऊँचाईयों में उड़ना सिखाता है।

छत्तीसगढ़ी गीत संगी

पंकज चन्द्रा
तृतीय वर्ष, बायो.

मोर संग चलव रे
मोर संग चलव जी
मोर संग चलव गा
मोर संग चलव रे
ओ गिरे थके हपटे मन
अऊ पडे डरे मनखे मन
मोर संग चलव जी
मोर संग चलव रे
मोर संग चलव गा
मोर संग चलव जी।।
अमरैया कस जुड छाँव मै
मोर संग बईठ जुड़ालव
अमरैया कस जुड छाँव मै
मोर संग बईठ जुडालव
पानी पिलव मैं सागर अव
दुःख पीरा बिसरावलव
पानी पिलव मैं सागर अव
दुःख पीरा बिसरालव
नवा जोत लव नव गाँव बर
नवा जोत लव नव गाँव बर
रस्ता नवा गढ़व रे
मोर संग चलव जी
मोर संग चलव गा
मोर संग चलव रे
मोर संग चलव जी
मोर संग चलव रे
ओ गिरे थके हपटे मन
अऊ परे डरे मनखे मन
मोर संग चलव रे
मोर संग चलव जी
मोर संग चलव गा
मोर संग चलव रे
मै लहरी अव
मोर लहर मा
फरव फूलो हरियाअव
मै लहरी अव
मोर लहर मा
फरव फूलो हरियाअव
महानदी में अरपा पैरी
तन मन धो हरियालव
महानदी मै अरपा पैरी
तन मन धो हरियालव
कहाँ जाहु बड दूर रहे गंगा
कहाँ जाहु बड दूर हे गंगा
पापी ईहे तरो रे
मोर संग चलव जी
मोर संग चलव रे
मोर संग चलव गा
मोर संग चलव जी
मोर संग चलव रे
ओ गिरे थके हपटे मन
अऊ परे डरे मनखे मन
मोर संग चलव गा
मोर संग चलव रे
मोर संग चलव जी
मोर संग चलव रे
मोर सिमट के सरग निसइनी
मो सिमट के सरग निसइनी
जुर मिल सब चलव रे
मोर संग चलव जी
मोर संग चलव रे
मोर संग चलव गा
मोर संग चलव रे
मोर संग चलव जी
ओ गिरे थके हपटे मन
अऊ परे डरे मनखे मन
मोर संग चलव गा
मोर संग चलव रे
मोर संग चलव जी
मोर संग चलव गा
मोर संग चलव रे
मोर संग चलव जी
मोर संग चलव गा
मोर संग चलव रे।

• थोड़ा सा सुकुन दे खुदा मुझे •

रागिनी जायसवाल
बी.सी.ए. तृतीय वर्ष

थोड़ा सा सुकुन दे खुदा मुझे तो किसी का क्या जाता है।
मेरी भावनाओं को इस दुनिया में कोई कदा समझ पाता है।
ये दुनिया भी मतलब की है और लोग भी मतलबी
थोड़ी सी खुशी देकर इसलिए खुदा भी इन्सान को भरमाता है।
कहते हैं सुख दुःख आना जाना है जिन्दगी में
ये जानते हुए भी इन्सान खुद को मोहमाया में फंसाता है।
ठोकर खाकर न छोड़, संघर्ष करना ए मेरे दोस्त
देख उस मोम को जो बार-बार बनने के लिए हर बार पिघल जाता है।
देखकर उन तारों को कुछ सिख लीजिए यारों
जो हर रात आसामान में बेमतलब टिमटिमाता है।
मेरे जिंदगी भी उस गुलाब के फुल की तरह है
जो खुबसूरत होकर कांटों के बीच भी मुस्कुराता है।
निखरुंगी एक दिन मैं भी इस दुनिया की भीड़ से
जैसे कोयले की खान से चमकता हुआ हीरा निकल जाता है।

• गुरु है मेरे •

बचपन में हाथ पकड़कर, हमें लिखाया करते हैं
रोने पर चॉकलेट देकर, हमें मनाया करते हैं
सहते हैं हमारी सारी बचकानी हरकतों को
और जिन्दगी जीने का सलिंका हमें सिखाया करते हैं
कभी समझाते हैं प्यार से, कभी फटकारते हैं ये
कभी कभी गुस्से में छड़ी से मारते हैं ये
बुरा न मानना ये अधिकार है इनका
भले के लिए ही तो हमें समझाते हैं ये।
कभी-कभी ज्ञान और सदाचार को पाठ पढ़ाते हैं वो
तो कभी-कभी हम जैसे बच्चे बन जाते हैं वो
समझ नहीं आता ये रिश्ता कैसा है
कि कभी गुरु तो कभी दोस्त बन जाते हैं वो
मेरे कदमों को चलना सिखाया है उसने
मुझे हर कोशिश काबिल बनाया है उसने
जहाँ सिर ऊँचा कर अपनी पहचान बताऊँ
उस मुकाम पर मुझे पहुँचाया हे उसने
जिन्होंने मुझे पढ़ना सिखाया वो गुरु है मेरे
जिन्होंने मन से डर को भगाया वो गुरु है मेरे
किन लब्जों से मैं शुक्रिया करुँ उनका
जिन्होंने आगे बढ़ना सिखाया वो गुरु है मेरे

• बाल मजदूर •

गरीब माँ बाप के घर जन्म लिया नन्हीं सी जान ने,
दुःख को भूल झूम उठे खुशी से वे,
क्षणिक हर्ष बदल गया अंधकार में,
वह खुशी वह हर्ष बन गई माध्यम चिंता का।
मुश्किल से हो पाता था हमारा गुजर-बसर,
कैसे करें हम इसका पालन-पोषण
जैसे-तैसे उसे पाला मां-बाप ने
बड़ा हो सहारा बने बस यही आशा थी मन में।
जो उम्र थी खेलने कूदने की जा पहुंचा होटलों में,
हाथों में पेन पेन्सिल की जगह ले ली फावड़ों ने,
सारा सपना चूर-सा हो गया इस जीवन में
माँ-बाप की आशाओं में सिमट सा गया वह,
ठेकेदार के अत्याचार और गरीबी के अंधकार में डूब गया वह,
कब तक सह पायेगा वह इस जीवन का बोझ,
इस काली कलूटी जिंदगी ने छीन ली उसकी सारी खुशियाँ,
इन सारी घटनाओं से तंग लटक गया मौत के फंदे पर....।
अरे मदद करना ही है तो उनकी करो,
जिन्हें जरुरत है आपकी और आपके जैसे इंसानों की।
कब तक भागोगे छोड़कर उन्हें,
क्या उनकी खुशियां, उनके आंसू नहीं दिखते आपको,
अरे उन पर भी तो कुछ रहम करो, कुछ रहम करो।।

पूजा साहू
बी.एस.सी. मैथ्स, तृतीय वर्ष

• नाना की लाठी •

उन अनजान लाठियों के बीच एक जानी-पहचानी,
काले भूरे रंग की, चमकदार, बीच-बीच में हल्की कारीगरी मेरे नाना की लाठी।
जो हर सबेरे एक जाने माने शख्स की जानी पहचानी,
हाथों में रह पूरे गांव की सैर कर आती।
दोनों में संबंध ऐसा की एक के बिना दूसरा न चलता,
हर दिन हर सबेरे एक जाना-पहचाना हाथ उसी लाठी को छूता।
उस लाठी को आदत ऐसी लगी, अगर एक सबेरे उसे कोने से उठाया न गया तो
वह बिना कुछ कहे, चुपचाप कोने में पड़ी, उस अगले सबेरे का इंतजार करती ।
वक्त बदला, रिश्ते बदले, वो जगह भी बदल गयी,
उन बदलते जगहों के साथ-साथ वो लाठी भी गुम हो गई।
पर आज भी मेरी निगाहें उस बदले हुए जगह को देखकर उसी लाठी को याद करती है
जो शायद कहीं न कहीं अभी भी उसी अगले सबेरे का इंतजार कर रही होगी।

पूजा साहू

• भूख और गरीबी •

मैं पढ़ना चाहती भी किताब,
तो सरकार ने बत्तर सरकारी स्कूल दे दिया।
करनी चाही थोड़ी मेहनत,
तो बाल श्रम कहके रोक दिया।
अब जब भूख से घर का,
एक रोटी क्या मांग ली,
उन बंगले वाले साहब ने तो दुत्कार कर,
इस भूखे पेट को ही झूठ कह दिया।
सो रहे हैं घर के कोने खामोश आज हर दीवार है,
किसी के घर चूल्हा न जला कई रोज से
तो किसी के घर हर दिन त्यौहार है
कोई सोचता आज भूख कैसे मिटेगी
तो किसी के घर छपपन भोग तैयार है
कही बिलख रहे हैं भूख से बच्चे
कही सड़ रहा अनाज का भंडार है
जो तुझे चढ़ाता चढ़ावे बेशुमार है।
तेरी रहमत उसपर निसार है
मुझे बता अब अये खुदा क्या तेरी
इबादत भी हिस्सा-ये-व्यापार है।

प्रिया निराला
एम.ए. इंग्लिश, प्रथम सेमेस्टर

• छत्तीसगढ़ दर्शन •

कविता

अपना प्रदेश देखो, कितना विशेष देखो,
आओ आओ घुमों यहां, खुशियों में झूमो यहां।
रायपुर की क्या शानी, अपनी हे राजधानी,
ऊँचे-ऊँचे है मकान यहां की, शान है निराली।
कोरबा की बिजली, हम सबको मिली,
देवभोग का मान, हीरे की यहां खान।
गूंजे जहां सत्यनाम, गिरौदपुरी है धाम,
कबीरा की सुनो वाणी, दामाखेड़ा की जुबानी।
महानदी की धार देखो, सिरपुर मल्हार देखो,
डोंगरगढ़ बम्लाई देखो, रतनपुर महामाई देखो।
देवी बेमेतरा वाली, देखो देखो भद्रकाली,
मंदिर एक मेउ देखो, देखो भोरनदेव देखो।
देखों ऊँचा मैनापाट, बड़े ही कठिन घाट,
तिब्बती है मकान देखो, कितनी है शान देखो।
बस्तर का वन देखो, यहां भोलापन देखो,
ऊँचे-ऊँचे झाड़ देखो, नदिया व पहाड़ देखो।
अपना प्रदेश हे कितना विशेष,
सबका दुलारा है, सच में बड़ा ही प्यारा है।

कविता बंजारे
बी.एस.सी., द्वितीय वर्ष

सफलता की पहली सीढ़ी - आत्मविश्वास

अगर आप सोचते हैं, कि आप हार गए हैं, तो आप हार चुके हैं।
अगर आप सोचते हैं कि आप में हौसला नहीं है, तो सच में नहीं है।
अगर आप जितना चाहते हैं मगर सोचते हैं कि आप जीत नहीं सकते हैं, तो निश्चित है आप नहीं जितेंगे।
अगर आप सोचते हैं कि आप हार जायेंगे तो, तो आप हार चुके हैं।
क्योंकि हम देखते हैं कि सफलता की शुरुआत इंसान की इच्छा से होती है, ये सब हमारी सोच पर निर्भर करता है
अगर आप सोचते हैं आप पिछड़ गये हैं, तो आप निश्चित ही पिछड़ गये हैं।
तरक्की करने के लिये आप की सोच ऊँची करनी होगी । कोई भी सफलता प्राप्त करने से पहले आपको अपने प्रति आत्मविश्वास लाना होगा।
जीवन की लड़ाईयां हमेशा सिर्फ तेज और मजबूत लोग नहीं जितते,
बल्कि आज नहीं तो कल जितता वही आदमी है जिसे आत्मविश्वास है कि वह जितेगा ही।
सफलता उनके साथ होती है, जिसमें आत्मविश्वास होता है।

कविता बंजारे
बी.एस.सी., द्वितीय वर्ष

• समाज और बेटी •

जब एक बेटी जन्म लेती है तो चलो ठीक है,
उसी घर में दूसरी बेटी जन्म लेती है तो ये क्या हुआ
बेटा होना था वंश कैसे बढ़ेगा।
ये समाज के लोग बेटी जन्म ना लेती तो वंश कैसे बढ़ेगा
अगर बेटी जन्म ना लेती तो।
जब एक बेटी जन्म लेती है तो उसे जन्म से ही
बोझ और परायाधन कहते हैं
ये समाज के लोग आपने तो एक बेटी और पिता के मध्य
बनने वाले अनोखे बंधन को पहले से कमजोर कर दिया
ये समाज के लोग जब आप जानते हो कि परिवर्तन ही
सृष्टि का नियम है तो आप भी अपने विचारों में परिवर्तन
लाओ ना जब आप जाते हो कि ये समाज क्या है
इनको बनाने वाले हम मनुष्य ही तो है
हम मनुष्य कि प्रवृत्ति तो समय के साथ-साथ भूल जाने कि है
ना ये तो समाज को भूल जाओ ना।

सुक्रांति जाटवर
एम.ए.हिन्दी, चतुर्थ सेमेस्टर

• माँ और पापा •

माँ के आँचल में पली हूँ
पापा के हाथों से बड़ी हुई हूँ।
माँ ने घर के काम करना सिखाया
पापा ने मुझे संस्कार है सिखाया।
माँ ने मुझे बड़ों का आदर करना सिखाया
पापा ने मुझे बत्तमिज को जवाब देना सिखाया
जब माँ पापा बेटी को इतने नाजों से पाले रहते हैं
तो बेटी उनके पास क्यों नहीं रह सकती।
जो कि एक बेटी को अपने मां पापा से अलग
किया जाता है आखिर क्यों ?

सिम्मी आजाद
बी.एस.सी. बायो, द्वितीय वर्ष

• कविता •

फूलों से नित हँसना सिखो
भौरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित
सिखो शीश झुकाना।।
सीख हवा के झोके से लो
कोमल भाव बहाना।
दूध और पानी से सीखो
मिलना और मिलाना।।
सूरज की किरणों से सीखो
जगना और जगाना।
लता और पेड़ों से सीखो
सबको गले लगाना।।

दीपा साहू
एम.ए.द्वितीय सेमेस्टर, हिन्दी

• जिन्दगी •

छोटी सी है जिंदगी
हर बात में खुश रहो...
जो चेहरा पास न हो
उसकी आवाज में खुश रहो...
कोई रुठा हो आपसे
उसके अंदाज में खुश रहो...
जो लौट के नहीं आने वाले
उनकी याद में खुश रहो...
कल किसने देखा है
अपने आज में खुश रहो...

पूर्णिमा भारती
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर, हिन्दी

About Father

यूं तो पिता के बारे में कहना इतना आसान नहीं होता है,
पिता की महिमा का गुणगान करना इतना आसान नहीं होता है।

हम जब बचपन में होते हैं, हमें कुछ समझ में नहीं आता,
हम कई लोगों से पूछते हैं, कोई नहीं समझा पाता है, लेकिन केवल
पिता ही होता है, जो हमें हर बात समझा पाता है,
हर बार समझाने वाला इंसान होता है पिता, बहुत बुद्धिमान होता है पिता...2

जो भी चीज हम मांगते हैं जीवन में, जो कुछ भी ख्वाहिश करते हैं,
जो कोई भी डिमांड करते हैं, वो हर चीज दिलाने वाला इंसान होता है
पिता, बहुत धनवान होता है पिता....2

तमाम मुसीबतों को लेकर उनसे लड़ने वाला इंसान होता है पिता,
बहुत बलवान होता है पिता....2, जो भी मुसीबतें आती है,
जीवन में उन सभी मुंसीबतों को दूर करने वाला इंसान होता है पिता,
शक्तिमान होता है पिता, संक्षेप में कहुं तो वास्तव में भगवान होता है पिता...2

वो अपने पसीने बेचकर, तुम्हें हर खुशी से नवाजेगा,
खुद की जिंदगी बैरंग करके, तुम्हारे जीवन में हर रंग खोलेगा,
वो पिता है, कभी कुछ नहीं बोलेगा, जब भी कुछ लेने की जिद करोगे,
बस एक बार पूछेगा, तुम्हारे एक मुस्कान के लिए अपने हर मेहनत को तौलेगा एक पिता है,
कभी कुछ नहीं बोलेगा।

समझौता करना क्या होता है, उससे पूछो हजार टेंशन में भी मुस्कुराना उससे पूछो,
बस घर में किसी को चिंता न हो इसलिए अपने मन के राज कभी नहीं खोलेगा, वो पिता है,
कभी कुछ नहीं बोलेगा।
तकलीफ उसे भी होती है, दिल उसका भी टूटता है,
बस तुम्हें बुरा न लगे, इसलिए बंद कमरे में चुपचाप रो लेगा,
इतने समझदार होता है पिता....2

Love Your Papa

Thank You....

सी.आर. गिरी
बी.एस.सी., तृतीय वर्ष

• उजाला उसी ने पाया है •

जो जागा अंधेरों में उजाला उसी ने पाया है
अपनी नाकामियों को भी जो अपने काम लाया है
उड़ जा उड़कर बादलों की ओट से घुंघट उठा
छिप गया जो शीत में मोती उसे तू ढूँढ़ ला
है तमन्ना अगर बड़ी तो साँझ को सूरज दिखा
चलते हुए जो रोक ले उस भीड़ से खुद को बचा
चोट देकर लहरे भी देती है चट्टाने हिला
मैं तो एक उम्मीद हूँ तू मुझे रौशन करके दिखा
डरता अगर इंसान तो कैसे चाँद तक वो पहुँचता
हौसले की आग को लगने न देना तू धुँआ
देकर हवा उस आग को अंधेरे को रौशनी दिखा।

चित्ररेखा साहू
बी.एस.सी. मैथ्स, प्रथम वर्ष

• फूलों की कविता •

फूलों की यह सुन्दर क्यारी
लगती है जो सबको प्यारी
फूल खिले हैं कई प्रकार के
अलग - अलग गंध के
अलग - अलग रंग के
लाल, पीले, नीले, गुलाबी
रंग हैं इसके भाँति-भाँति।
उपवन को ये महकाते हैं
सबके मन को था जाते हैं।
श्रृंगार करके दुल्हन का ये
देखो कितने इतराते हैं
छुईमुई जैसे नाजुक है ये
अदा है इनकी कितनी प्यारी
फूलों की यह सुन्दर क्यारी
लगती है जो सबको प्यारी

लेखिका
ममता जायसवाल
एम.ए., द्वितीय सेमेस्टर

• मेरा छत्तीसगढ़ •

हम छत्तीसगढ़ के छत्तीसगढ़ हमारा है,
धान का कटोरा यह सब प्रान्तों से न्यारा है
भोले भाले किसानों को यह प्राणों से भी प्यारा है,
छत्तीसगढ़ के नाम से जानता इसको जग सारा है।
महानदी है जिनकी जीवन रेखा,
प्यास मिटाती है छत्तीसगढ़ की यह है सबने देखा।
शिहावा पर्वत से निकलकर सागर में मिल जाती है
छ.ग. के साथ-साथ कई प्रदेशों में भी अन्न उगाती है।
रतनपुर जहां की धर्म नगरी
छलकती जहां भक्ति की गघरी।
दुधाधारी मठ है जहाँ,
भीड़ हर वक्त है वहाँ।
छत्तीसगढ़ की पावन जीम पर
अनेकों मंदिर है यही पर।
सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर बौद्ध विहार दर्शाता है,
खैरागढ़ के मधुर गान सबके मन को भाता है।
डोंगरगढ़ में दंतेश्वरी मंदिर,
रतनपुर महामाया है,
राजिम में राजीवलोचन, जहां तीन नदियाँ समाया है।
शिवरीनारायण में शबरी माता राम को बेर खिलाते हैं,
गिरौदपुरी में भक्त सभी सतनाम-सतनाम गाते हैं।
छत्तीसगढ़ की है शान निराली,
इसमें नदी पर्वत प्यारी।
यहां है अनेक पर्यटन स्थल,
याद दिलाता है जहां की सुन्दरता हर पल।
छत्तीसगढ़ में होते है अनेक त्यौहार,
जो लाता है खुशियों का बयार।
हरेली, पोला, तीजा, दिवाली,
छेरछेरा होली में हो जाता है मन मतवाला।
छत्तीसगढ़ की बात है अनमोल,
यहां पर ना होता खुशियों का मोल।
हम छत्तीसगढ़ वासी सदा करते हैं इनका गुणगान,
छत्तीसगढ़ है जिनकी आन, बान और शान।
हम छत्तीसगढ़ के हैं, छत्तीसगढ़िया हमारा पहचान है,
यकिन ना हो तो वेद भी पढ़लो,
छत्तीसगढ़ कितना महान है।।

विमला साहू
एम.एस.सी द्वितीय सेमेस्टर, फिजिक्स

महाविद्यालय की गतिविधियां

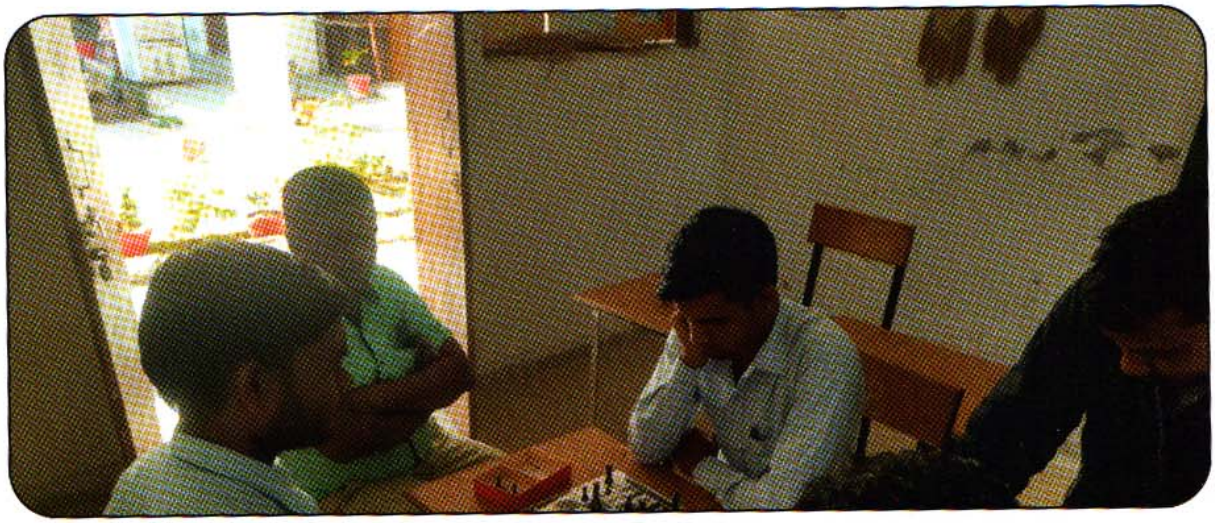

महाविद्यालय की गतिविधियां

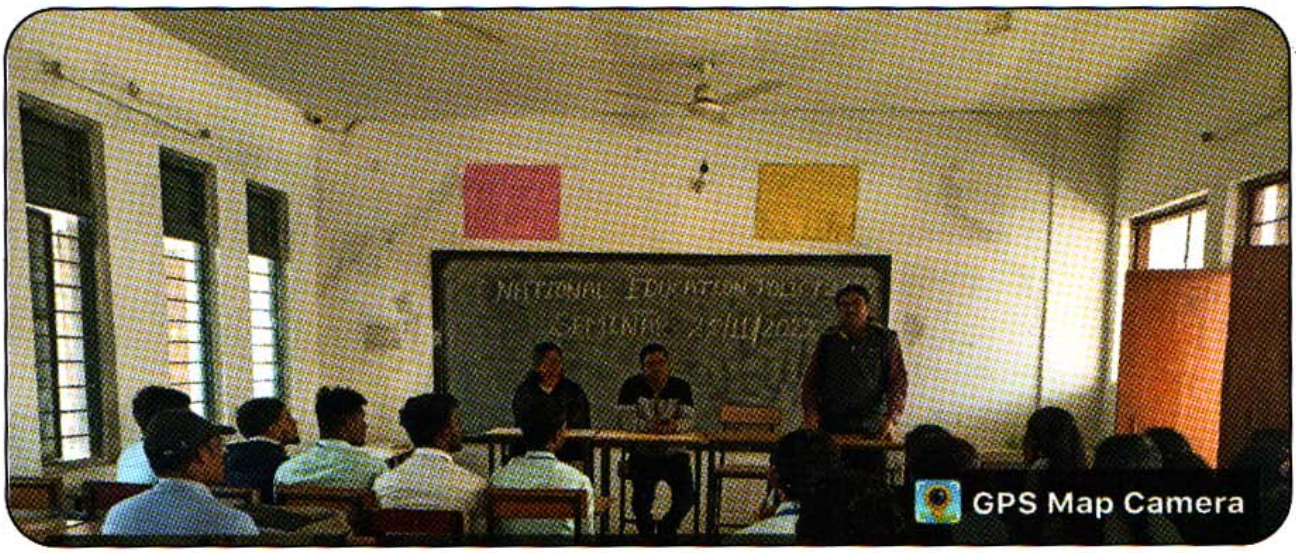

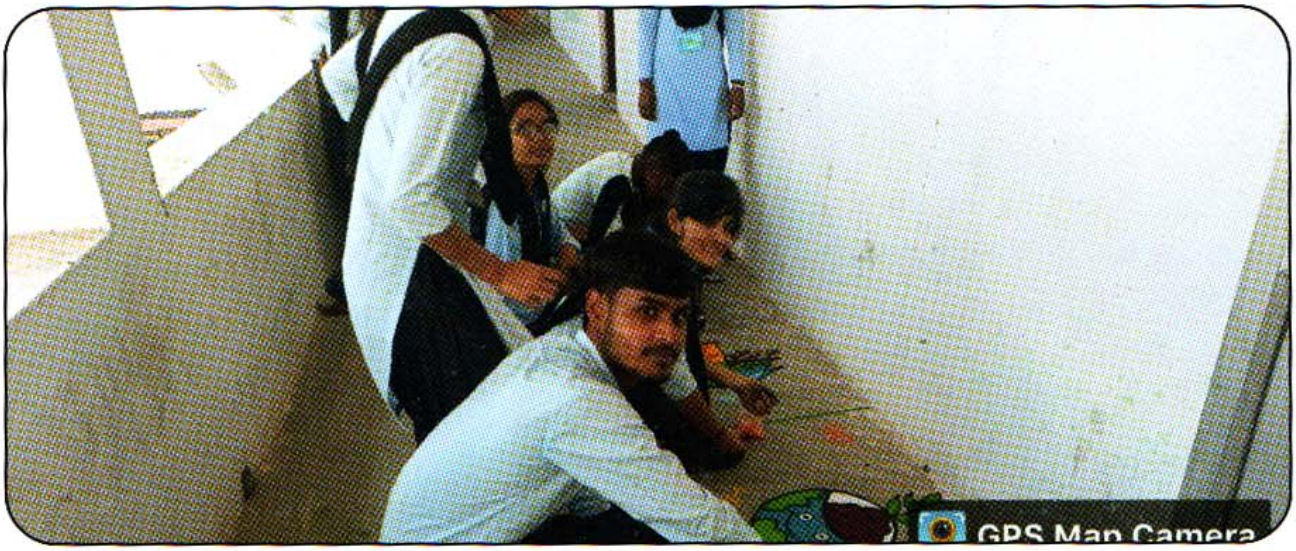

हेमलता साहू
बी.ए. प्रथम वर्ष

हेमलता साहू
बी.ए. प्रथम वर्ष

• बेटियां •

जब जब जन्म लेती है बेटियाँ,
खुशियाँ साथ लाती है बेटियाँ।
ईश्वर की सौगात है बेटियाँ,
सुबह की पहली किरण है बेटियाँ।
तारों की शीतल छाया है बेटियाँ
आँगन की चिड़ियाँ हे बेटियाँ।
त्याग और समर्पण सिखाती हे बेटियाँ,
नये-नये रिश्ते बनाती है बेटियां।
जिस घर जाए उजाला लाती है बेटियाँ
बार-बार याद आती है बेटियां।
बेटियों की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटियाँ।

सुक्रांती जाटवर
एम.ए. हिन्दी, चतुर्थ सेमेस्टर

• सर पे कफन बांध चली बेटियां •

सर पे कफन बाँध चली बेटियाँ
होठों पे मुस्कान लिये चली बेटियाँ
वीरता की शान लिये चली बेटियाँ
हाथों में तलवार लिये चली बेटियाँ
सर पे कफन बाँध चली बेटियाँ
चारों दिशाओं में ज्ञान का आलोक जगाए बेटियाँ
प्रगति के पथ पर चली बेटियाँ
सर पे कफन बाँध चली बेटियाँ
तारों के समान चमकती बेटियाँ
अंतरिक्षयान पर चल पढ़ी बेटियाँ
शौर्य का गुणगान किये
दुश्मानों पर लड़ पड़ी बेटियाँ

राजेश्वरी टण्डन
एम.ए.हिन्दी द्वितीय सेमेस्टर

• जग हो तो नेट •

मोबाईल के जमाना है
चलत है भारी नेट
एकर चक्कर मा भात घलो
नई खवावय भर पेट
आठोकाल बारो महिना
आषाढ़ सावन जेठ
जय हो तोर नेट।

उठत बईठत रेंगत दउड़त,
घसत घसत कोलगेट
नई छोड़न मोबाईल ला
भले छोड़न मोबाईल ला
भले डिपटी मा हो जाय लेट
सब झन लगे हैं मोबाईल मा
गरीब होवय चाहे सेठ
जय हो तोर नेट।

डोकरा बबा घलो हाथ उठाके
खोजथे मोबाईल मा नेट
कभू चढहत है अटरिया ता
कभू चढहत हे गेट।
एक चक्कर मा ले बर पड़गे
महँगा वाला मोबाईल सेट।
जय हो तोर नेट
जय हो तोर नेट।

अर्जुन कुमार माली
एम.ए. हिन्दी, द्वितीय सेमेस्टर

• छत्तीसगढ़ के गौरव की जय हो •

छत्तीसगढ़ के जन-गण के गौरव की जय हो।
घुमा हूँ घने वनों के बीच यहाँ मैं जब-जब
भारत भूमि के अंतर्मन में आकर
जैसे एक सुहाना सपना पल भर में साकार हो उठे
पुलकित हुआ मेरा मन सुंदरता से अप्रतिम
चित्रकूट झरने की धुन पर जैसे डोला।
कुसुमित हुआ मेरा मन जैसे डोला
कुसुमित हुआ मेरा मन मित्रों
स्थापना दिवस की इस गौरव बेला पर।
वीर नारायण सिंह की कुर्बानी को करु सलाम
आज मैं इस महान धरती पर
जहां पर भूमकाल की क्रांति हुई थी।
गुरु घासीदास ने शांति और समता का
अमर संदेश दिया था।
खूब चंद ने समृद्धि का स्वपन रचा था।
महानदी की घाटी में विकसित भारत की
जड़े जम रही है।।
मेहनतकश इंसानों का श्रम
इसके हृदय कमल के विकसित हरित स्वर्ण
कवि सौरभमय सा।
छत्तीसगढ़ के जग-गण के
गौरव की जय हो।।

हेमलता साहू
एम.ए.द्वितीय सेमेस्टर (हिन्दी)

• देश भक्ति •

हम सबकी प्यारी
लगती सबसे न्यारी।
कश्मीर से कन्याकुमारी
राष्ट्रभाषा हमारी।
साहित्य की फुलवारी
सरल सुबोध पर है भारी
अंग्रेजी से जंग जारी
सम्मान की है अधिकारी
जन-जन की हो दुलारी
हिन्दी ही पहचान हमारी

ज्योति साहू
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर (हिन्दी)

• उदास न हो •

मेरे नदीम मेरे हमसफर, उदास न हो।
कठिन सही तेरी मंजिल, मगर उदास न हो।
कदम कदम पे चट्टाने खड़ी रहे लेकिन
जो चल निकालते हैं दरिया तो फिर नहीं रुकते।
हवाएं कितना भी टकराए, आंधिया बनकर
मगर घटाओं के परछम कभी नहीं झूकते
मेरे नदीम मेरे हमसफर...
हर एक तालाश के रास्ते में मुश्किलें हैं मगर
हर एक तालाश मुरादों के रंग लाती है।
हजारों चांद सितारों का खून होता है
तब तक सुबह फिजाओं पे मुस्कुराती है
मेरे नदीम मेरे हमसफर...
जो अपने खून को पानी बना नहीं सकते
वो जिन्दगी में नया रंग ला नहीं सकते
जो रास्ते के अन्धेरों से हार जात हैं
वो मंजिलों के उजालों को पा नहीं सकते
मेरे नदीम मेरे हमसफर...
मेरे नदीम मेरे हमसफर, उदास न हो
कठिन सही तेरी मंजिल, मगर उदास न हो।

कु. पूजा लहरे
एम.ए.द्वितीय सेमेस्टर (हिन्दी)

किसी ने जिंदगी पर क्या गजब की कविता कही है...

दो पल की जिंदगी है

आज बचपन तो कल जवानी
परसो बुढ़ापा फिर खत्म कहानी
चलो हंसकर जिए चलो खुलकर जिए
फिर ना आने वाली है यह रात सुहानी
फिर ना आने वाली हे यह दिन सुहाना
कल जो बित गया सो बित गया
क्यों करते हो आने वाले कल की चिंता
आज और अभी जिओ
पता नहीं दूसरे पल हो या ना हो...

प्रीति भास्कर
एम.ए. हिन्दी, चतुर्थ सेमेस्टर

• माँ तो माँ होती है •

माँ तो माँ होती है
एक माँ अपने बच्चों को नौ महिने
कोख में रखकर अपने खून से सींचती है
वही बच्चे बड़े होकर उस माँ का
दिल दुखाते हैं,
फिर भी माँ अपने बच्चों के उज्जवल
भविष्य की कामना करती है।
कितना संघर्ष करती है वो जो हमें इस दुनियां में
लाकर जन्नत की सैर कराती है
माँ तो माँ होती है, जो अपने बच्चों के लिए
किसी भी दुःख पीड़ा से लड़ जाती है।
धन्य है वो माँ जो जगत-जननी कहलाती है।
एक माँ ही अपने घर को, स्वर्ग बनाती है।
कितनी भी तकलीफ हो जीवन में,
सब सहन कर लेती है।
माँ तो माँ होती है, जो जगत-जननी कहलाती है।

अंजना जाटवर
एम.ए.हिन्दी, चतुर्थ सेमेस्टर

• कोशिश कर •

कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन सा लक्ष्य रख, निशाना लगा,
मरुस्थल से भी फिर, जल निकलेगा।
मेहनत कर पौधों को पानी दे,
बंजर से भी फिर, फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा।
सीने में उम्मीदों को जिंदा रख,
समन्दर से भी, गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख, कुछ कर गुजरने की
जो कुछ थमा-थमा है चल निकलेगा।
कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा।

गायत्री शांते
बी.काम. प्रथम वर्ष

• पिता •

कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता
कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता
कभी धरती तो कभी आसमान है पिता
जन्म दिया है अगर माँ ने
जानेगा जिससे जग वो पहचान है पिता
कभी कंधों पे बिठाकर मेला दिखाता है पिता
कभी बनके थोड़ा घुमाता है पिता
माँ अगर पैरों पे चूलना सिखाती है
तो पैरों पे खड़ा होना सिखाता है पिता
कभी रोटी तो कभी पानी है पिता,
कभी बुढ़ापा तो कभी जवानी है पिता
माँ अगर है मासूम सी लोरी
तो कभी न भूल पाऊँगा वो कहानी है पिता
कभी हंसी तो कभी अनुशासन है पिता
कभी मौन तो कभी भाषण है पिता
माँ अगर घर में रसोइ है,
तो चलता है जिससे घर वो रोशन है पिता
कभी ख्वाब को पूरा करने की जिम्मेदारी है पिता
कभी आंसूओं में छिपी लाचारी है पिता
माँ घर बेच सकती है जरुरत पे गहने
तो जो अपने को बेच दे वो व्यापारी है पिता
कभी हंसी और खुशी का मेला है पिता
कभी कितना तन्हा और अकेला है पिता
माँ तो कह दे ता है अपने दिल की बात
सब कुछ समेट के आसमान सा फेला है पिता
कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता
कभी धरती तो कभी आसमान है पिता

छोटी टंडन
बी.काम. प्रथम वर्ष

• माँ तो माँ होती है •

माँ तो माँ होती है
एक माँ अपने बच्चों को नौ महिने
कोख में रखकर अपने खून से सींचती है
वही बच्चे बड़े होकर उस माँ का
दिल दुखाते हैं,
फिर भी माँ अपने बच्चों के उज्जवल
भविष्य की कामना करती है।
कितना संघर्ष करती है वो जो हमें इस दुनियां में
लाकर जन्नत की सैर कराती है
माँ तो माँ होती है, जो अपने बच्चों के लिए
किसी भी दुःख पीड़ा से लड़ जाती है।
धन्य है वो माँ जो जगत-जननी कहलाती है।
एक माँ ही अपने घर को, स्वर्ग बनाती है।
कितनी भी तकलीफ हो जीवन में,
सब सहन कर लेती है।
माँ तो माँ होती है, जो जगत-जननी कहलाती है।

अंजना जाटवर
एम.ए.हिन्दी, चतुर्थ सेमेस्टर

• कोशिश कर •

कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन सा लक्ष्य रख, निशाना लगा,
मरुस्थल से भी फिर, जल निकलेगा।
मेहनत कर पौधों को पानी दे,
बंजर से भी फिर, फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा।
सीने में उम्मीदों को जिंदा रख,
समन्दर से भी, गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख, कुछ कर गुजरने की
जो कुछ थमा-थमा है चल निकलेगा।
कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा।

गायत्री शांते
बी.काम. प्रथम वर्ष

• पिता •

कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता
कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता
कभी धरती तो कभी आसमान है पिता
जन्म दिया है अगर माँ ने
जानेगा जिससे जग वो पहचान है पिता
कभी कंधों पे बिठाकर मेला दिखाता है पिता
कभी बनके थोड़ा घुमाता है पिता
माँ अगर पैरों पे चूलना सिखाती है
तो पैरों पे खड़ा होना सिखाता है पिता
कभी रोटी तो कभी पानी है पिता,
कभी बुढ़ापा तो कभी जवानी है पिता
माँ अगर है मासूम सी लोरी
तो कभी न भूल पाऊँगा वो कहानी है पिता
कभी हंसी तो कभी अनुशासन है पिता
कभी मौन तो कभी भाषण है पिता
माँ अगर घर में रसोइ है,
तो चलता है जिससे घर वो रोशन है पिता
कभी ख्वाब को पूरा करने की जिम्मेदारी है पिता
कभी आंसूओं में छिपी लाचारी है पिता
माँ घर बेच सकती है जरुरत पे गहने
तो जो अपने को बेच दे वो व्यापारी है पिता
कभी हंसी और खुशी का मेला है पिता
कभी कितना तन्हा और अकेला है पिता
माँ तो कह दे ता है अपने दिल की बात
सब कुछ समेट के आसमान सा फेला है पिता
कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता
कभी धरती तो कभी आसमान है पिता

छोटी टंडन
बी.काम. प्रथम वर्ष

● माटी अऊ दाई के ममता - छत्तीगसढ़ी (कविता गीत) ●

रविकुमार
बी.एस.सी., तृतीय

माटी म जन्मेव माटी मा बाढ़ेव
माटी के मया के मया नई जानेव ना।।
दाई-ददा के मैं दुलरवा लईका
किसन्हा घर मा जानमाये ना।।
माटी म जन्मेव माटी मा बाढ़ेव
माटी के मया नई जानवे ना।।
नानेकुन ले मोला बड़े करे हस
दाई कोन ल कइथे जानेव ना।।
माटी म जन्मेव माटी मा बाढ़ेव
माटी के मया नई जानेव ना।।
हो जा ही रथिया ले फेर बिहिनिहा
मोला तै हर बताये ना।।
जाति-पाती के भरम ले मोला
तै-हर दूर कराये ना।।
माटी म जन्मेव माटी म बाढ़ेव
माटी के मया नई जानेव ना।।
नानेकून ले मोला ऊगरी धर के
रेंगे बा मोला सिखाए ना।।
हो जाही जुन्ना कतको जमाना
नवा डगर तैं बताये ना।।

माटी म जन्मेव माटी मा बाढ़ेव
माटी के मया नई जानेव ना।।
जन ले मैं मोबाईल धरे हव
संगी-जहुरिहा भुलाये ना
आघू के डंडा-पंचरंगा खेला ला
सब्बो ला मैं हर भुलाये ना।।
माटी म जन्मेव माटी बाढ़ेव
माटी के मया नई जानेव ना।।
संगी जहुरिहा अऊ बैरी ले
मिलना तैं हर बातयें ना
भले ही तै नई पढ़े-लिखे
लेकिन ! पढ़े ला मोला सिखाए ना।।
माटी म जन्मेव माटी म बाढ़ेव
माटी के मया नई जानेव ना।।
एके ठन मोन बस आस लगे हैं
माटी के माया ला जानेव ना।।
हर जनम बस तोरे कोरा ले
मोला जनम तैं देवाबे ना।।
माटी म जन्मेव माटी म बाढ़ेव
माटी के मया नई जानेव ना।।

• कविता •

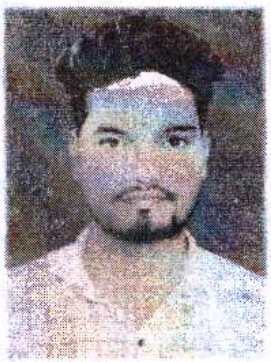

धर्म विजय रात्रे
बी.काम. द्वितीय

कुछ करना है तो डअकर चल
थोड़ा दुनिया से हटकर चल
लीक पर तो सभी चल लेते हैं
कभी इतिहास को पलटकर चल
बिना काम के मुकाम कैसा
बिना मेहन्त के दम कैसा
जब तक ना हासिल हो मंजिल
तो राह में आराम कैसा
अर्जुन सा निशाना रख
मन में ना कोई बहाना रख

लक्ष्य सामने है बस उसी पे
अपना ठिकाना रख।
सोच मत साकार कर
अपने कर्मों से प्यार कर
मिलेगा तेरी मेहनत का फल
किसी ओर का ना इंतजार कर
जो चले थे अकेले
उनके पीछे आज मेले हैं
जो करते रहे इंतजार उनकी
जिंदगी में आज भी झमेले हैं।।

• दिया हम भी जलायेंगे •

दिया हम भी जलाएंगे
देशहित में एक छोटी भूमिका निभाएंगे,
सम्पूर्ण धरा को अयोध्या सा महकायेंगे
विलीन कर के मैल मन के एकजुटता दिखाएंगे
जलाकर दीप हिन्दुस्तान में अंधकार को मिटाएंगे
एक-एक मिलकर ये संकल्प उठाएंगे
अनेकता में एकता का संदेश फैलाएंगे
घर की मुंडेर से ही दीप जलाएंगे
चाँद की रोशनी में संकट के बादल हटाएंगे
वतन की समस्यसा से जुड़ जाएंगे
इक नई ताकत का संदेश फैलाएंगे
सम्पूण्र विश्व को रोशनी से महकायेंगे
छट जाएगा अंधियारा
भीगी पलकों के आँसू मोती बन जाएंगे,
हर रुह की प्रार्थना ईश्वर तक पहुँचाएंगे
दिया हम भी जलाएंगे

ईशा महंत
बी.काम. प्रथम वर्ष

• गिरना भी अच्छा है •

कवि.- हरिवंश राय बच्चन

गिरना भी अच्छा है
औकात का पता चलता है
बढ़ते हैं जब हाथ उठाने को
अपनों का पता चलता है।
जिन्हें गुस्सा आता है
वो लोग सच्चे होते हैं
मैंने झूठे को अक्सर
मुस्कुराते हुए देखा है।
सीख रहा हूँ अब मैं इंसानों को
पढ़ने का हुनर
सुना है चेहरे पे किताबों से ज्यादा
लिखा होता है।
ज्ञान व्यक्ति को, सुंदर ही नहीं ज्ञान
व्यक्ति को बना देता है उदार।
ज्ञान बिना क्या है जीवन,
ज्ञान बिना झूठा संसार।।

ज्योति पटेल
बी.काम. प्रथम वर्ष

• ईश्वर ने कुछ भी दिया नहीं •

दिल डरता है तो मना लिया करता हूँ।
ये मन बहाने बहुत करता है।
पर मना लिया करता हूँ...
शुक्र है उस ईश्वर का जिसने
कुछ भी न दिया मुझको,
अगर दिया होता तो,
यू कोशिश ना करता खुद को पाने का

रवि नारंग
बी.काम. द्वितीय वर्ष

• गुरु को जिंदगी का... •

कोरे कागज को अखबार बनाता है
गुरु को जिंदगी का हर हिसाब आता है
रंग-बिरंगे फूलों से वो
संसार को एक सुंदर बाग बनाता है
वही तो है जो तारों को भी रोशनी देकर
खुद सूरज बनकर जगमगाता है।
नटखट शैतान बच्चों की लाख शैतानियाँ सहता है...
फिर भी गुरु धैर्यवान रहता है
ज्ञान की एक बूंद से
सिंचता है वो अपनी फसल
तभी तो शिष्य कभी अर्जुन
कभ राम बनकर परचम लहराता है।

रेशमी लहरे
बी.काम., द्वितीय वर्ष

• दुनिया की इस भीड़ में •

दुनिया की इस भीड़ में
खुद को पहचान तू
न रख किसी से उम्मीद
खुद को सवार तू
मेहनत कर, हौसला रख
हर मोड़ को पार कर
एक दिन चमकेगा
खुद पे विश्वास रख
क्या हुआ आज तुझे कोई नहीं जानता
कल तेरा नाम होगा
दुनिया की इस भीड़ में
भीड़ की वजह तेरा काम होगा
भीड़ की वजह तेरा काम होगा

स्मृति मधुकर
बी.काम. प्रथम वर्ष

• नैतिक शिक्षा •

लोग एक दूसरे को गिराने में लगे हुए हैं, जीवन की इस डगर में स्वयं को जीवन से ज्यादा तनाव रहहता है दूसरों के सुखी रहने से दूसरों को गिराने के सुखी रहने से दूसरों को गिराने में इतना समयस लगाते हैं जैसे आशिक लगाते हैं किसी का होने में आज के वातावरण में रहना जैसे यहूदी रहते थे। हितकर के परिवेश में किसी को अपना मानना भी दूभर हो गया है। इस नकली परिधि के वेश में पर करे क्या किस-किस को समझाये इस अलौकिक देश में जरुरी है इस समाज में सिखाये नैतिक शिक्षा जिंदगी के कोर्स में।

असफलता एक चुनौती है इसे स्वीकार करो
क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो नींद चैन को त्यागो
तुम संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जय कार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

धनुष उठा प्रहार कर तू सबसे पहला वार कर,
अग्नि सी धधक हिरन सी सजग सजग सिंह सी दहाड़ कर
रुके न तू थके न तू झुके न तु थमे न तु
सदा चले, थके न तु रुके न तु, झुके न तुम ।

धर्म विजय रात्रे
बी.काम. द्वितीय

बड़ा बनने के लिए बड़ा सोचो

अत्यंत गरीब परिवार का एक बेरोजगार युवक नौकरी की तलाश में किसी दूसरे शहर जाने के लिए रेल गाड़ी से सफर कर रहा था। घर में कभी कभार ही सब्जी बनती थी, इसलिए उसने रास्ते में खाने के लिए सिर्फ रोटियां ही रखी थी।

आधा रास्ता गुजर जाने के बाद उसे भूख लगने लगी और वह टिफिन में से रोटियां निकाल कर खाने लगा। उसके खाने का तरीका कुछ अजीब था, वह रोटी का एक टुकड़ा लेता और उसे टिफिन के अन्दर कुछ ऐसे डालता मानो रोटी के साथ कुछ और भी खा रहा हो, जबकि उसके पास तो सिर्फ रोटियां ही थी। उसकी इस हरकत को देखकर आसपास के और दूसरे यात्री हैरान हो रहे थे। वह युवक हर बार रोटी का एक टुकड़ा लेता और झूठमूठ का टिफिन में डालता और खाता। सभी सोच रहे थे कि आखिर वह युवक ऐसा क्यों कर रहा था। आखिर कार एक व्यक्ति से रहा नहीं गया और उसने उससे पूछ ही लिया कि भैया तुम ऐसा क्यों कर रहे हो, तुम्हारे पास सब्जी तो है ही नहीं फिर रोटी के टुकड़े को हर बार खाली टिफिन में डालकर ऐसे खा रहे हो मानों उसमें सब्जी हो।

तब उस युवक ने जवाब दिया, भैया इस खाली ढक्कन में सब्जी नहीं है लेकिन मैं अपने मन में यह सोच कर खा रहा हूँ कि इसमें बहुत सारा आचार है, मैं आचार के साथ रोटी खा रहा हूँ।

फिर व्यक्ति ने पूछा, खाली ढक्कन में अचार सोच कर सूखी रोटी को खा रहे हो तो क्या तुम्हें आचार का स्वाद आ रहा है ?

हाँ, बिलकुम आ रहा है, मैं रोटी के साथ आचार सोचकर खा रहा हूँ और मुझे बहुत अच्छा भी लग रहा है। ये युवक ने जवाब दिया।

उसके इस बात को आसपास के यात्रियों ने भी सुना और उन्हीं में से एक व्यक्ति बोला, जब सोचना ही था तो मुम आचार की जगह पर मटर पनीर सोचते, शाही गोभी सोचते तुम्हें इनका स्वाद मिल जाता। तुम्हारे कहने के मुताबिक तुमने आचार सोचा तो आचार का स्वाद आया तो और स्वादिष्ट चीजों के बारे में सोचते तो उनका स्वाद आता। सोचना ही था तो भला छोटा क्यों सोचे तुम्हें तो बड़ा सोचना चाहिए था।

शिक्षा :

मित्रों इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जेसा सोचोगे वैसा पाओगे। छोटी सोच होगी तो छोटा मिलेगा, बड़ी सोच होगी तो बड़ा मिलेगा। इसलिए जीवन में हमेशा बड़ा सोचो। बड़े सपने देखो, तो हमेशा बड़ा ही पाओगे। छोटी सोच में भी उतनी ही उर्जा और समय खतप होगी जितनी बड़ी सोच में, इसलिए जब सोचना ही है तो हमेशा बड़ा ही सोचो।

मेघा भारद्वाज
बी.काम. प्रथम वर्ष

• गुरु पूर्ण कविता •

अंधेरे जीवन में हमारे...
नया सबेरा लाते हैं।
उनकी ऊँची शान है...
शिक्षक वो कहलाते हैं।
जीवन के हर पन्ने को ...
हमें वो समझाते हैं।
उनको जैसा और कहां...
शिक्षक वो कहलाते हैं।
सही गलत का पाठ पढ़ाते...
आत्मविश्वास बनाते हैं।
उनको अलग पहचान है...
शिक्षक वो कहलाते हैं।।
माता-पिता जैसे वो भी...
हममें चमत्कार देखना चाहते हैं
उनके जैसा भगवान कहां...
शिक्षक वो कहलाते हैं।

रजनी बंजारे
बी.काम. प्रथम वर्ष

• बचपन •

एक बचपन का जमाना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था...
चाहत चांद को पाने की थी,
पद दिल तितली का दिवाना था...
खबर ना थी कुछ सुबह की...
ना शाम का ठिकाना था
थक कर आना स्कूल से...
पर खेलने भी जाना था...
मां की कहानी थी
परियों का फसाना था...
बारिश में कागज की नाव थी
हर मौसम सुहाना था
एक बचपन का जमाना था...

सूरज आदित्य
बी.ए. प्रथम वर्ष

• सफर में धूप तो होगी... •

सफर में धूप तो होगी।
जो चल सको तो चलो।।
सभी हैं भीड़ में।
तुम भी निकल सको तो चलो।।
किसी के वास्ते राहें कहां बदलती है।
तुम अपने आप को खुद ही बदल सको तो चलो।।
यहां किसी को कोई रास्ता नहीं देता।
मुझे गिरा कर अगर तुम सम्हल सको तो चलो।।

दिलेश्वर सिंह सिदार
सहा.प्रा. वाणिज्य

• दिल कहता है झूम उठो •

मन मंदिर में प्रभु
जब-जब आती है याद,
दिल कहता है झूम उठो,
हे प्रभु ! सब तेरा है !
कहते हैं लोग केवल ईश्वर मंदिर में होते हैं ?
हम कहते हैं कि ईश्वर मन में होते हैं,
बिन तेरे मन मेरा सुना !
हे प्रभु अब आओ ना
अपनी मधुर धुन सुनाओ ना
अब आओ ना प्रभु !
आ जावो ना प्रभु !

धनेश्वरी चन्द्रा
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

बेटी बिन अधूरा संसार

रविना टण्डन
एम.ए.हिन्दी द्वितीय सेमेस्टर

मैं तेरे घर आंगन की शोभा
मुझसे सजता जीवन सबका
तेरे घर की रौनक हूं मैं
दूजे घर का मैं सम्मान कहलाती
दो-दो घर मुझसे ही सजते
वंश को आगे मैं ही बढ़ाती।
सोचो अगर जो मैं न जन्मी
तो कैसा होगा ये जीवन
कहां से मिलेगी प्यारी बहन
कहां से मिलेगा नन्हा बचपन
कहां मिलेगी मां की ममता
कैसे मिलेगा पत्नी का प्यार
जब मैं न होऊंगी जीवन में तो
कैसे होगा तुम्हारा उद्धार
क्या खुद से जीवन पा पाओगे
बिन मेरे क्या जी पाओगे
खत्म मुझे करने से पहले
सोच लेना तुम फिर से एक बार
बिन मेरे न जीवन संभव
खत्म हो जायेगा ये संसार

आत्मविश्वास

जब से सीखी हूँ, गिर कर उठने का हुनर
उस वक्त से ही मैं नायब हो गयी हूँ
दुनिया की नजरों में नाकाम सही
मगर खुद की नजरों में कामयाब हो गयी हूँ।
नहीं दुखाती दिल मेरा अब, लोंगों की कड़वी भाषा
कैसे भी हो हालात सदा मन में रहती एक आशा।
रुकती नहीं है जो कभी रहों में
बहती हुई मैं वो आन हो गयी हूँ।
दुनिया की नजरों में नाकाम सही
मगर खुद की नजरों में मैं कामयाब हो गयी हूँ।

अंजना जाटवर
एम.ए. हिन्दी, चतुर्थ सेमेस्टर

एक बूढ़ी और की कहानी

एक बूढ़ी अम्मा है जिसके दो बेटे और एक बेटी थी। वह घर, घर जाकर काम करके पैसे कमा कर अपने बच्चों को पढ़ाती है और अपने बच्चों को पढ़ा लिखकर एक कामयाब व्यक्ति बनाती है। उसके रास्ते में हजार कठिनाई आए फिर भी वह बुढ़ी औरत बपने बच्चों को पढ़ाती है।

आखिर कार उस की मेहनत रंग लाती है और उसके दोनों बेटे पढ़ लिखकर बड़े आदमी बन जाते हैं। उसकी बेटी की शादी हो जाती है, उसके बेटे की भी शादी हो जाती है। सब खुशी से रहने लगते हैं।

थोड़े दिनों बाद उसकी बहुए उसे दुख देने लगती है। सारा घर का काम उससे करवाती है फिर बचा हुआ खाना उसे खाने को देती है। उसके बेटे भी कुछ नहीं बोलते, अपनी-अपनी पत्नी का साथ देते हैं। बाद में उसे वृद्धा आश्रम में छोड़ कर चले जाते हैं। कुछ सालों बाद उसके बच्चों को अपनी गलती का एहसास होता है और वह अपनी माँ को वृद्धा आश्रम से वापस ले आते हैं और सब कुछ सुख से रहने लगते हैं।

कुमारी पटेल
बी.ए. द्वितीय वर्ष

● छत्तीसगढ़ की लोक परम्परा में धान्य संस्कृति ●

छत्तीसगढ़ भारत के हृदय भाग में पूर्व की ओर उत्तर से दक्षिण एक पट्टी के रुप में स्थित है। यह क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का नवां बड़ा राज्य है। जनसंख्या की दृष्टि से यह देश सत्रहवां राज्य है। इसका कुल क्षेत्रफल 135194 वर्ग किलोमीटर है जनसंख्या 2,55,40,196 है।

छत्तीसगढ़ में भोजन और धान जैसा की छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा गया है। यहां के लोगों का मुख्य भोजन धान से संबंधित है। भात, घुसका बासी, घोरे, पेज, अंगाकर, करा भुठिया और चीला का स्थान सबसे ऊपर है। ये सभी चावल से बनते हैं ।

जब धान की नई फसल आती है तो लोग उसके चांवल का विविध उपयोग करते हैं। बासी छत्तीसगढ़ के मूलनिवासियों का प्रमुख भोजन है। यह भारत का ही रुपांतरित स्वरुप है। भोजन के बाद बच जाने पर पके भात को पानी में डुबा दिया जाता है।

रविना
एम.ए. हिन्दी, सेकेण्ड सेमेस्टर

● कविता ●

नदी सा चल सरोवर सा रुक नहीं
अपनी ख्वाहिशों को सीमित कर नहीं
अभी ख्वाहिशों के परिंदों की उड़ान बाकी है
तेरे सब्र का इम्तहान बहुत से लेंगे
तेरी खामोशियों को तेरी कमजोरी समझेंगे
अभी खामोशियों के पीछे की ज्वाला बाकी है
क्या फिक्र तुझे अभी पूरा जहान बाकी है
बिन मेहनत मिली सफलता पीतल है
अंदर से ज्वाला बाहर से शीतल है
अभी सोने को कुन्दन बनाना बाकी है
क्या फिक्र तुझे अभी पूरा जहान बाकी है
जो सोच लिया तुने समझो पा लिया
सफलता की ओर कदम तुने बढ़ा लिया
अभी सफलता का शीर्ष झुकना बाकी है
क्या फिक्र तुझे अभी पूरा जहान बाकी है।

सोनिया भारद्वाज
बी.काम. प्रथम वर्ष

● बेटियाँ ●

ईश्वर की वरदान होती है बेटियाँ,
सबसे महान होती हे बेटियाँ।
माँ बनकर खाना खिलाती,
सबके सुख में अपना दुख भूल जाती।
बहन बनकर राखी पहनाती,
घर आंगन में खुशियां फैलाती।
बहु बनकर अपना फर्ज निभाती,
दुख सहकर भी चुप रह जाती।
देती सबको खुशी हैं बेटियाँ
लेकिन क्यों खुद दुखी है बेटियाँ।
क्यों उनको खुलकर जीने की आजादी नहीं है।
क्यों उनके पढ़ाई के लिए कोई आज राजी नहीं है।
क्यों उनके जन्म होते ही सबका चेहरा उदास होता है,
क्यों उनके आने से सबको बोझ का एहसास होता है।
देश तो आजाद है पर बेटियाँ क्यों गुलाम है,
बेटे का तो जीवन है सवेरा, पर बेटियों के क्यू शाम है
बेटे-बेटे की रट करने वाले समझलों बेटियाँ भी महान है
क्योंकि बेटियाँ तो ईश्वर का वरदान है।।

विमला साहू
एम.एस.सी. फिजिक्स, द्वितीय सेमेस्टर

ईमानदार वीर बालक

सुविचार

''सत्यता जीवन में हो और ज्ञान नैतिक मूल्य हो साथ''

रमेश बहुत ही प्यारा बालक था। वह कक्षा दूसरी में पढ़ता था। रमेश विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस का राष्ट्रीय त्यौहार मनाया जाने वाला था। रमेश बहुत उत्साहित था। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए रमेश को उसकी कक्षा अध्यापिका ने स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग लेने के लिए बोला था। उसके हर्ष का कोई ठिकाना नहीं था। वह खुशी-खुशी इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए तैयारियां करने लगा। स्वतंत्रता दिवस की होने वाली परेड में सभी साथियों के साथ पूर्व अभ्यास निरंतर करता रहा और अत्यंत उत्साह से भरा हुआ था। परेड वाले दिन जब वह स्कूल के लिए तैयार होने लगा तो रमेश ने अपने दादा जी को खोजा दादाजी रमेश के साथ निरंतर विद्यालय जाया करते थे। उसे पहुंचाने किंतु दादाजी नहीं मिले मां से पूछा तो मां ने बताया दादाजी गांव गए हैं वहां दादी की तबियत खराब है और हॉस्पिटल में हैं। पिताजी भी गए हुए हैं। अब मैं तुम्हें स्कूल पहुँचा कर गांव निकलूंगी।

रमेश ने यह बात सुनी तो बहुत दुखी हुआ और वह स्वयं भी दादी के पास जाने के लिए जिद करने लगा। इस पर उसकी मां रमेश को अपने साथ लेकर गांव चली गई। जब वह कुछ दिन बाद विद्यालय पहुंचा वहां प्रधानाचार्य ने उन सभी बालकों को बुलाया जिन्होंने परेड में भाग नहीं लिया था । इस पर रमेश का नाम नहीं पुकारा गया बाकि सभी विद्यार्थियों को उनके अभिभावक को लाने के लिए कहा गया। रमेश ने सोचा कि मेरा नाम प्रधानाचार्य ने नहीं बोला लगाता है वह भूल गए होंगे। रमेश प्रधानाचार्य के ऑफिस में गया और उसने प्रधानाचार्य से कहा कि मैं भी उस दिन परेड में नहीं आया था मगर आपने मेरा नाम नहीं लिया क्या मुझे भी अपने

माता पिता को बुलाकर लाना है ? रमेश के इस सरल स्वभाव को देखकर प्राधानाचार्य खुश हुए और उन्होंने रमेश से बताया कि तुम्हारे माता-पिता ने फोन करके तुम्हारे स्कूल ना आने का कारण मुझे पहले ही बना दिया था। तुम्हारी ईमानदारी से मुझे खुशी हुई तुम अच्छे से पढ़ाई करो और अगली बार परेड में निश्चित रुप से भाग लेना।

नैतिक शिक्षा - सदैव सत्य बोलना चाहिये और सत्य का साथ देना चाहिए और व्यक्ति का स्वभाव ही उस व्यक्ति का परिचय है।

निशा खुंटे
बी.काम. प्रथम वर्ष

आओ एक जुट होकर

आओ एक जुट होकर सब
एक शिक्षित समाज बनाएं
संकुचित विचारों वाली मानसिकता को
सबके मन से मिटायें।

धर्म-जाति का मेल मिटे सब
बस मानव धर्म हो सर्ववरि जिससे
हो सके समाज में एक नई
चेतना और जागृति।

शिक्षित कर विचारों को सबसे
मनुष्यता का पाठ पढ़ाकर आओ
सब मिलकर फिर से अपना
कर्तव्य निभाएं।

ऐसे करे जागरुक सबको जिससे
समाज में हो परिवर्तन शुद्ध सुदृढ़
मानसिक के संग एक नए विश्व
का पर्दापण

एक नए स्वप्न को पूरा करने
एक नया जागरण लाने को आओ
एक संकल्प उठाकर आगे कदम बढ़ाए।

जिस दिन बेटा कामयाब हो कर अक्सर
बन जाएगा कुंभकरन की तरह ना सोना
होई जगा ना पाएगा शिक्षा एक ऐसी पूंजी
जो कोई बांट ना पाएगा नहीं पड़ेगा जो
कोई बाल जीवन भर पछताएगा नहीं

उठो चलोम सब करे पढ़ाई
यही असली धन है भाई
क ख ग घ सब वर्ण रट लो
अंग्रेजी के ए बी सी डी से निपट लो

गुनाह भाग जोड़ सब सीख लो
मेहनत करो न भीख लो
चाहे बनो डाक्टर इंजीनियर या प्रोफेसर
या करो अपना व्यापक पढ़ाई

का हि ज्ञान है जो लगाएगा
तुमको पार बढ़ोगे आगे जब हो
सग पढ़ाई इसके सिवा कुछ काम न आई

निशा खुंटे
बी.काम. प्रथम वर्ष

''भ्रूण हत्या अपराध है''

माँ मैं बेटी हूँ, मुझे आने दो
मैं तो तेरी इकलौती हूँ, माँ मैं बेटी हूँ।

न मार मुझे कोख में, मैं दुनिया के सपने देखती हूँ
माँ मैं बेटी हूँ, मैं तो तेरी इकलौती हूँ।
माँ इस बेरहम जमाने से न डर, मैं भी सब कुछ
जान लेती हूँ।
माँ मैं बेटी हूँ, मैं तो तेरी इकलौती हूँ।

माँ मैं तेरे उस बेटी से कम नहीं, जिस पर तू नाज करती है।
माँ मैं भी तो तेरे बुढ़ापे की लाठी हूँ
माँ मैं बेटी हूँ, मैं तो तेरी इकलौती हूँ।
माँ मैं भी बेटी हूँ...

अनिल यादव
(अतिथि व्याख्याता)
भौतिक शास्त्र

• संगीत का असर •

राम श्याम दो भाई थे, दोनों एक ही विद्यालय में पढ़ा करते थे दोनों ही विद्यालय में पढ़ा करते थे और यहां तक कि एक ही कक्षा में किन्तु राम पढ़ने में होनहार था वहीं उसका भाई श्याम पढ़ने से बचता था और ना पढने के ढेरो बहाने ढूंढता है राम के दोस्त पढ़ने वाले थे और श्याम के दोस्त ना पढ़ने वाले और कामचोरी करने वाले थे। राम अपने भाई श्याम को दोस्तों से बचने के लिए कहा करता, मगर श्याम उसे डांट लगा देता और कहता अपने काम से काम रखा करो। श्याम के दोस्त घर से स्कूल जाने के लिए निकलते और रास्ते में कहीं और चले जाते। कभी पार्क में बैठते, कभी जाकर कहीं खाना-पीना करते और कभी फिल्म देखा करते थे। श्याम भी उनकी संगति में आ गया और वह भी धीरे-धीरे स्कूल जाने से बचता रहता। श्याम भी उन दोस्तों के साथ बाहर में खाना पीना और घूमना करता राम उसके इस प्रकार की धोखा घड़ी से बहुत चिंतित था ।

श्याम से परीक्षा में फेल होने की बात भी कही मगर श्याम ने नहीं माना। एक दिन की बात है श्याम स्कूल जा रहा था उसके दोस्त मिल गए और उन्होंने कहा आज स्कूल नहीं जाना है। हम सभी अपने दोस्त हरि का जन्म दिवस मनाएंगे और बाहर खाना-पीना करेंगे और खूब मजे करेंगे। पहले तो श्याम ने मना किया किंतु दोस्तों के बार-बार बोलने पर वह उनके साथ चला गया। श्याम और उसके मित्रों ने खूब पार्टी करी और उस दिन स्कूल नहीं गये। इस प्रकार का काम वह और उसके दोस्त सफल नहीं हो पाए वह फेल हो गए। राम ने इस बार भी और बार की तरह प्रथम स्ीान प्राप्त किया। श्याम अपने घर मार्कशीट लेकर गया जिस पर उसके माता पिता ने देखा और बहुत उदास हुए। उन्हें बहुत दुख था कि मेरा एक बेटा पढ़ने में अच्छा है और दूसरा नालायक । श्याम किसी भी विषय में पास नहीं हो पाया । श्याम के माता पिता बहुत दुखी होते रहे । उन्होंने सोचा कि अब में दूसरे लोगों को क्या बताऊंगा कि मेरा बेटा एक भी विषय में पास नहीं हो पाया। इस प्रकार मां पिताजी को श्याम ने बहुत चिंतित व दुखी देखा जिस पर उसे भी दुख हुआ श्याम ने अपने मां बाप को भरोसा दिलाया कि मैं अगली परीक्षा में सफल होकर दिखाऊंगा। श्याम ने अपने उन सब दोस्तों को छोड़ दिया, जिन्होंने उसकी सफलता में उसका मार्ग रोका था। उन सभी छल और कपअ करने वाले दोस्तों को छोड़कर अपनी पढ़ाई में ध्यान लगाया। नतीजा यह हुआ कि साल भर की मेहनत से वह परीक्षा में सफल ही नहीं अपितु विद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। इस पर उसके माता पिता को बहुत खुशी हुई है अपने पुत्र श्याम को गले से लगाया उन्हें शाबाशी दी श्याम को पता चल गया था कि जैसी संगति मिलेगी वैसा ही परिणाम मिलेगा।

नैतिक शिक्षा - जैसी संगति में रहते है उससे वैसा ही गुण आता है।
अर्थात - अच्छी संगति का संगत करना चाहिए।

• माँ पर कविता •

माँ की ममता माँ का प्यार,
झूठा है सारा संसार।
गोद उठाती लोरी गाती,
पहले खाना हमें खिलाती।
करती पल-पल हमें दुलार,
माँ की ममता माँ का प्यार।
माँ की आँखों के तारे हम,
घर के राज दुलारे हम।
मीठे सूर में रही पुकार,
माँ की ममता माँ का प्यार।
दूर नहीं है रहने देती,
आंसू नहीं बहने देती।
कर खिलौनों की भरमार,
माँ की ममता माँ का प्यार।

गनेशी पटेल
बी.ए. द्वितीय वर्ष

बचपन कितना सुहाना था

वो बचपन भी कितना सुहाना था,
जिसका रोज एक नया फंसाना था।
कभी पापा के कंधों को,
तो कभी मां के आँचल का सहारा था।
कभी बेफिक्रे मिट्टी के खेल का,
तो कभ दोस्तों का साथ मस्ताना था।
कभी नंगे पाँव वो दौड़ का,
तो कभी पतंग ना पकड़ पाने का बहाना था।
कभी बिन आँसू रोने का,
तो कभी बात मनवाने का बहाना था।
सच कहूँ तो वो दिन ही हसीन थे,
ना कुछ छिपाना और दिल में जो आए बताना था।

कामिनी साहू
बी.काम. द्वितीय वर्ष

• मेरे प्यारे Bhaiyaa •

Sister and Brotherm Friendship
is to rainbow between two
hearts sharing seven colours,
Feeling, Love, Sandness, Truth,
Happiness, Faith, Secrets,
and Respect
You are the best part of my life bhaiyaa

जो बोलूं मान जाते हो, रुठ जाऊँ Chocolate तो खिलाते हो
जब चुप चाप बैठ जाऊँ, तो हसाते हो।
जब दूसरे मुझे कुछ बोले तो गुस्सा हो जाते हो
फिर क्यों मुझसे इतना झगड़ते हो।
जब रोती हूँ तो चुप कराते हो
मस्ती के मुझे Time कमरे में बद कर जाते हो...
मेरे हर बात मनवाते हो, अपनी बारी में मुँह बनाते हो
फिर क्यों आपके बालों की चोटी नहीं बनाने देते हो...
जब चाहे गुस्सा हो जाते हो, जब चाहे रुठ जाते हो..
पहले तो रुलाते हो, फिर हसाते हो
और Last में खुद Upset हो जाते हो...
Lunch के Time अपना बच्चा बन जाना
खुद के हाथों से रोटी भी नहीं खाना
और जब दिखे Meggi तो कोने में छिपा कर खाना...
दिन भर मस्ती दिन भर मुस्कुराना
और साथ में दूसरों को भी हसाना
जब कुछ काम हो मेरा तो सुबह के आये शाम को घर जाना।
कुछ भी Problem हो दौड़ के आ जाते हो
सुबह से शाम तक भूखे भी रह जाते हो...
सुबह की पहली मुस्कान हो आप
फिर क्यों रुठ जाते हो बार-बार...
Please हमेशा ऐसे ही रहना
कभी भी मेरे से दूर मत होना...।
आप हमेशा मेरे लिए सबसे Important रहोगे Bhaiyaa
चाहे आपसे बात हो या ना हो
चाहे आप दूर हो या पास
आप हमेशा मुस्कुराते हो Bhaiyaa
You always be my Hero Tom Bhaiyaa

निशा अजगले
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

हेमलता साहू
बी.ए. प्रथम वर्ष

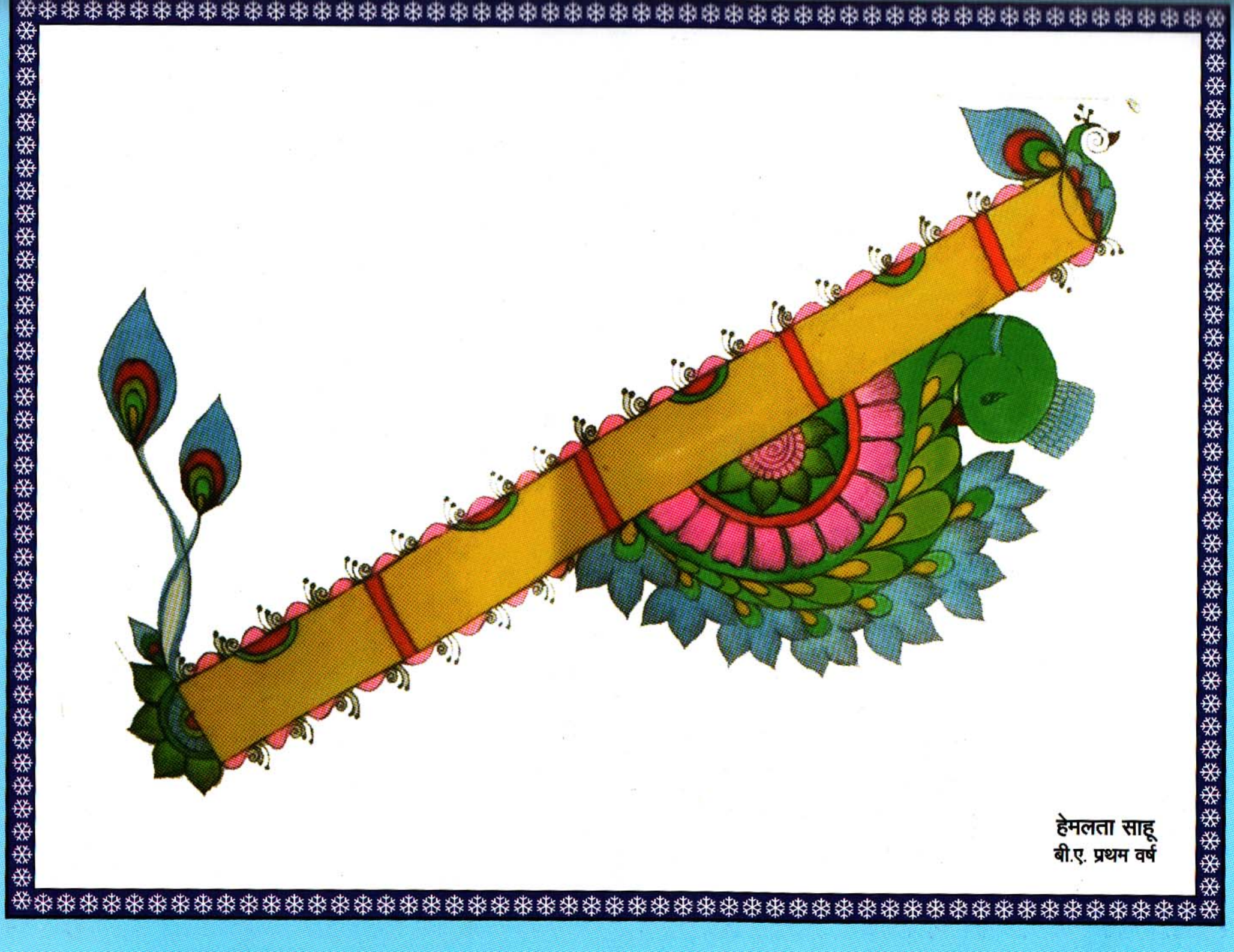

हेमलता साहू
बी.ए. प्रथम वर्ष

हेमलता साहू
बी.ए. प्रथम वर्ष

हेमलता साहू
बी.ए. प्रथम वर्ष

निबंध

कोविड कोरोना वायरस

रुपरेखा - 1) प्रस्तावना, 2) कैसे फेलता है, 3) वायरस के लक्षण, 4) बचने के उपाय, 5) वायरस का पहला वार कहां, 6) वैक्सीन की खोज, 7) लॉकडाउन की पहल, 8) उपसंहार

प्रस्तावना : कोरोना वायसय (कोविड 19) विषाणुओं का एक घातक समूह है यह आरएनए वायरस होते हैं। अबतक यह पता नहीं चला है कि इस वायरस की उत्पत्ति कहाँ से और कैसे हुई है।

समाचार की दृष्टि से यह कोरोना वायरस चीन के वुहान शहर से फेला है ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि वुहान शहर के लैब से या फिर पशु मार्केट यानी समुद्री खाद्य मार्केट से दुनिया में फेला है। लेकिन इसका प्रमाण सिद्ध नहीं हुआ है। दिसम्बर 2019 में चीन में पहली मौत की पुष्टि हुई सितम्बर 2021 तक लगभग 50 लाख लोगों की जान चली गई।

वायरस कैसे फैलता है

कोरोना वायरस संक्रमित मरीज के खाँसने छीकने या स्पर्श करने से तेजी से फेलता है। संक्रमित मरीज के द्वारा सतह छूने, मुँह, हाथ, चेहरे को हाथ लगाने से फेलता है। यह वायरस हवा में नहीं है लेकिन जहाँ पर होता है कई दिनों तक जीवित रहता है। सम्पर्क में आने पर अपना असर दिखाना शुरु कर देता है।

कोविड 19 के लक्षण : इस वायरस के संक्रमण में निम्नलिखित लक्षण देखने को मिलते हैं -

तेज बुखार, गले में दर्द, खत्म न होने वाली खाँसी, साँस लेने में तकलीफ

बचने के उपाय : कोविड से बचने के निम्नलिखित उपाय समझाये गये हैं :

1) 20 सेकेंड तक बार बार हाथ धोना चाहिए।
2) हैण्ड सैनिटाइजर, हैण्डवॉश, साबुन आदि का उपयोग किया जाना चाहिए।
3) बाहर कम से कम या आवश्यक हो तभी निकलना चाहिए।
4) हमेशा मास्क पहनें।
5) भीड़-भाड़ वाले इलाके में न जाये।

वायरस का पहला वार : कोरोनावायरस का पहला वार चीन के वुहान शहर में हुआ। देखते-देखते ये वायरस सारी दुनिया में तेजी के साथ फेल गया।

वैक्सीन की खोज : कोविड 19 से लड़नपे के लिये हमारे वैज्ञानिक डॉक्टर निरंतर रिसर्च में लगे रहे। अन्ततः डॉक्टरों एवं वैज्ञानिकों ने सफलता हासिल की वे वैक्सीन बनाने में सफल रहे। इसमें आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक संस्थायें भी शामिल है। आज सौ करोड़ से ज्यादा लोगों को वैक्सीन नग चुकी है। अधिकतर लोग वायरस के खतरे से बाहर भी हैं, लेकिन खतरा अभी पूरी तरहा से टला नहीं है। दूसरी लहर के बाद तीसरी लहर ने भी दस्तक दे दी है, इसलिए सावधान हो जाइये।

लॉकडाउन की पहल : कोविड 19 की रोकथाम के लिए प्रधानमंत्री जी ने मार्च 21 में लाकडाउनर की घोषणा की। सारे देश में धारा 144 लागू कर दी गयी। दुकानें, दफ्तर, कॉलेज, रेस्टोरेंट, मार्केट सब बंद कर दिये गये। ताकि इस महामारी से छुटकारा मिल सके।

उपसंहार - आज देखा जा रहा है, जहाँ मरीजों की संख्या में कमी आ रही थी वहीं अब तीसरी लहर ने भी दस्तक दे दी है। सभी लोग अभी से सावधान हो जाइये, अन्यथा महा जनहानि भीषण मौतें हो सकती है। वायरस का नया वैरियेंट ओमीक्रोन सुनने में आ रहा है कोशिश करें इस वैरियंट को आने से पहले ही खदेड़ दिया जाये।

नर्मता बंजारे
बी.ए. द्वितीय वर्ष

मोबाईल के फायदे और नुकसान

प्रस्तावना : आज के आधुनिक युग में मोबाईल फोन सबकी जरूरत बन गया है। जो ज्यादातर हर काम में हमारी किसी न किसी तरह से मदद कर रहा है। इसलिए आज के समय में मोबाईल सबसे ज्यादा उपयोग में आने वाली चीज है। इसका उपयोग बच्चे से लेकर व्यस्क तक हर कोई कर रहा है। मोबाईल फोन का उपयोग हम सही तरह से सीमित समय के लिए जरूरत पड़ने पर ही करें तो अच्छा है। यदि हम मोबाईल का प्रयोग हद से ज्यादा करें तो इसके बहुत ही ज्यादा दुष्परिणाम भी हो सकते हैं।

मोबाईल फोन के फायदे :

1. इससे हम दुनिया के किसी भी व्यक्ति से बिना उसके पास जाएँ बात कर सकते हैं।
2. मोबाईल फोन आकार में छोटा होने के कारण्ए हमारे जेब में आसानी से आ जाता है। जो बहुत सुविधाजन है।
3. मोबाईल फोन का प्रयोग हम व्यापार में कैलकुलेटर के रुप में कर सकते हैं ।
4. इसका उपयोग करके हम एक दूसरे को संदेश भेज सकते हैं।
5. मोबाईल में हम इंटरनेट का उपयोग कर सकते हैं। जिससे हम इंटरनेट पर उपलब्ध सभी जानकारियों को पढ़ सकते हैं।
6. मोबाईल फोन को अब महिला सुरक्षा के लिए भी उपयोग में लिया जाने लगा है, कुछ एप्स की मदद से इसमें एक बटन दबाते ही संदेश परिचितों के पास पहुँचा जाता है। जिससे महिला की मदद के लिए परिचित जल्दी पहुँच सकते हैं।
7. अगर हम किसी भी नई जगह पर जाते हैं तो मोबाईल की सहायता से हम मेंप और अपनी करंट लोकेशन भी देख सकते हैं।
8. इन दिनों मोबाईल फोन का इस्तेमाल कई तरह के आधिकारिक कामों के लिए भी किया जा रहा है। शेड्यूल मीटिंग से लेकर डॉक्यूमेंट भेजने और प्राप्त करने, प्रेजेटेन न देना अलार्म, जॉब एप्लीकेशन आदि।

मोबाईन फोन के नुकसान :

1. मोबाईल फोन के ज्यादा इस्तेमाल से आँखें कमजोर होती है, जिससे भविष्य में की दिखाई देने की समस्या उत्पन्न हो सकती है।
2. आज विद्यार्थी पूरा दिन मोबाईल में गेम खेलते रहते हैं जिससे उनका मन पढ़ाई में नहीं लग पाता है।
3. आज के समय में हम सब कुछ मोबाईल में ही सेव कर लेते हैं और याद रखने की कोशिश नहीं करते है हमारी याददाश्त कमजोर होने लग जाती है।
4. आजकल लोग वाहन चलाते समय मोबाईल पर बातें करते रहते हैं जिससे उनका ध्यान भटक जाता है और दुर्घटना घट जाती है।
5. मोबाईल से ईयरफोन लगा के गाने सुनने से युवाओं की सुनने की शक्ति कमजोर हो रही है।

निष्कर्ष : मोबाइल इस वैज्ञानिक युग में विज्ञान द्वारा दी गयी एक ऐसी टेक्नॉलॉजी है, जिसका हम सही तरह से उपयोग करें तो ही अच्छा है, वरना इसके कई दुष्प्रभाव भी है, जरुरत से ज्यादा प्रयोग करना हमारे लिए काफी समस्याएँ सही कर सकता है, इसलिए हम सभी को मोबाईल का बहुत कम हो और जरुरत पड़ने पर ही प्रयोग करना चाहिए।

अनिषा
बी.ए. द्वितीय

महाविद्यालय की गतिविधियां

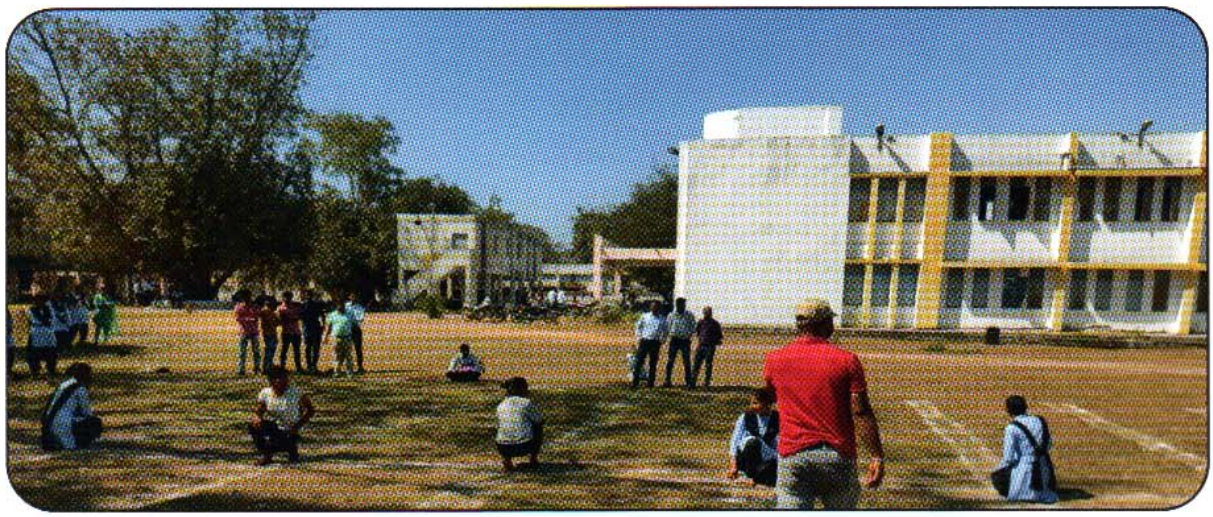

महाविद्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियां